चन्दामामा
जून १९७९

अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष १९७९ के उपलक्ष्य में

chic-modithread

पेश करते हैं अपनी प्रथम

बच्चों के लिए नीडलवर्क प्रतियोगिता

भाग कैसे लें?

प्रतियोगिता प्रवेश पत्र में, ऊपर दिखाए गये हाथी का डिज़ाइन अपने सही आकार में छापा गया है. तुम इस डिज़ाइन या अपने मनपसंद किसी भी डिज़ाइन को कम से कम 12 C.M. X 12 C.M. के आकार में एम्ब्रॉयडरी, बुनाई, क्रोशिया, मशीनकाम, अड्डा काम (नक्काशी) या दस्तकारी द्वारा बना सकते हो. कशीदाकारी का काम सिर्फ मोदीथ्रेड से ही किया जाना चाहिए. प्रविष्टियों की परख सफाई, खूबसूरती, रंगों के चुनाव और इस्तेमाल किए गये टांकों के आधार पर की जाएगी. हर प्रविष्टि के साथ पूरी तरह भरा हुआ प्रतियोगिता प्रवेश कूपन और इस्तेमाल किए गये मोदीथ्रेड के लेबल होना ज़रूरी है. प्रतियोगिता प्रवेश कूपन और नियम व शर्तों का प्रपत्र मोदी धागों के सभी विक्रेताओं, मोदीधागों की काउन्टर शॉप, मोदीथ्रेड के डिपो और वितरकों तथा शिक पत्रिका के अप्रैल, मई, जून और जुलाई १९७९ के अंकों में मिलेगा.

जीतने के कई अवसर!

सारे देश और प्रतियोगिता को १० क्षेत्रों में बाँटा गया है और हर क्षेत्र के लिए ५४५ पुरस्कार हैं. हर क्षेत्र की प्रथम पुरस्कार प्राप्त प्रविष्टि को शानदार राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुना जाएगा. अपनी प्रविष्टि मोदी धागों के अपने क्षेत्र के डिपो में भेजो. डिपो के पते नियम व शर्तों में दिए गये हैं.

हर क्षेत्र में दो अलग-अलग उम्र के समूहों को अलग-अलग पुरस्कार दिए जाएंगे

उम्र समूह-६ से ११ वर्ष :

Grand National Prize Chic Modithread Scholarship worth Rs. 1000/- and "Needlework Young Princess 1979 Trophy" plus a Childcare hamper of dresses, toys and nursery furniture worth Rs. 1000/-.

Ten 1st Prizes Childcare hampers of dresses, toys and nursery furniture. Each hamper worth Rs. 500/-.

Ten 2nd Prizes Sets of dresses from chic Creations. Each set worth Rs. 200/-.

Ten 3rd Prizes Each worth Rs. 100/-. Gift hampers of Johnson's* Baby Powder, Johnson's* baby soap and Johnson's* baby cream. *Trade Mark

100 Merit Prizes Sets of Children's books from U.S.S.R. Book Centre and Lok Vangmaya Griha (Pvt.) Ltd., Bombay. Each set worth Rs. 20/-.

100 Consolation Prizes S.N.P. FUN-N-COLOUR Painting Kits worth Rs. 17/- each.

उम्र समूह-१२ से १६ वर्ष :

Grand National Prize Chic Modithread Scholarship worth Rs. 1000/- and "Needlework Princess 1979 Trophy" plus a gift cheque from Childcare worth Rs. 1000/-.

Ten 1st Prizes Gift cheques from Childcare Each worth Rs. 500/-.

Ten 2nd Prizes Sets of dresses from chic Creations. Each set worth Rs. 200/-.

Ten 3rd Prizes Each worth Rs. 100/-. Gift hampers of Johnson's* Baby Powder, Johnson's* Complexion Cream and Stayfree* Sanitary Napkins. *Trade Mark

100 Merit Prizes Sets of books from U.S.S.R. Book Centre and Lok Vangmaya Griha (Pvt.) Ltd., Bombay. Each set worth Rs. 20/-.

100 Consolation Prizes Chic Needlework Kits worth Rs. 17/- each.

First 500 entries in each of the ten territories will receive a Duraflex Plastic book jacket

शिक शौक पढ़ें – शिक पत्रिका में बच्चों का विशेष भाग! प्रतियोगिता की पूरी जानकारी के लिए लिखें : Chic Publications, Akash Ganga, 89, Bhulabhai Desai Road, Bombay 400026.

जल्दी कीजिए! प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त '७९. अपनी प्रविष्टि अपने क्षेत्र के मोदीथ्रेड डिपो में भेजें। पते की जानकारी के लिए नियम व शर्तें पढ़ें।

चन्दामामा-कैमल रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

इनाम जीतिए

कैमल–पहला इनाम १५ रु.
कैमल–दूसरा इनाम १० रु.
कैमल–तीसरा इनाम ५ रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामिल हो सकते हैं। ऊपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पते पर भेजिए P.B. No. 9928, COLABA, Bombay-400 005.

परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

Name.. Age....................

Address...

कृपया अपना नाम और पता अंग्रेज़ी में लिखिए।

CONTEST NO. 9

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: *30-6-1979*

Vision

MASTER ELECTRONICS THE PRACTICAL WAY

• **AHMEDABAD:** Radio Electronics • **BARODA:** General Electronics • **BOMBAY:** (1) Akbarally's (2) India's Hobby Centre (3) Bombay Toys • **BANGALORE:** (1) Southern Electronics (2) Safire • **COCHIN:** Components & Devices. • **CALICUT:** (1) Naik Electricals (2) Radio Centre • **COIMBATORE:** Union Trading Co • **CALCUTTA:** Railton Electronics • **HUBLI:** Gokhale Agencies. • **INDORE:** Atlas Radio Corporation • **KOTTAYAM:** (1) Moni & Co (2) J. J. Electronics. • **MANGALORE:** Manohar Radio House • **MADRAS:** Skyking Radio Agencies • **MYSORE:** Ashok Electronics • **MADURAI:** Universal Traders • **POONA:** (1) King Electronics (2) Solar Elecronics • **QUILON:** Mony's Radio Services • **TRICHY:** (1) Khani Radio (2) Radio Centre.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "मानवता" है। इसके द्वारा हमें यह विदित होता है कि आज के समाज में अपराध करनेवाले सभी लोग मानवता से दूर हैं, ऐसा समझा नहीं जा सकता। अपराधियों के अपराधों के कारण जान लेना और मानवता के आधार पर उसका समर्थन करना दण्ड विधान के लिए आवश्यक है।

अमर वाणी

एकाकी, गृह संत्यक्तः,
पाणि पात्रो, दिगंबरः
सोपि संवाह्यते लोके
तृष्णाया पश्य कौतुकं ॥

[एकाकी, गृहत्यागी, भिक्षुक और दिगंबर तक लोभ के शिकार हो जाते हैं।]

वर्ष : २१ | जून १९७९ | अंक : १०

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

अशोक मंगशूलि, अर्थाण (कर्नाटक)

प्रश्न : धूमकेतु के माने क्या है?

उत्तर : सूर्य के केन्द्रबिंदु बने सौर कुटुंब में उस केन्द्र के चतुर्दिक परिभ्रमण करनेवाले ग्रह, उप ग्रह, ग्रह शकल, उल्काएँ तथा पुच्छल तारे भी हैं। ये सब दीर्घ वृत्त कक्षा में घूमते सूर्य के समीप आ जाते हैं और फिर से बहुत दूर चले जाते हैं। जब वे सूर्य के समीप में आते हैं, तभी हम उनकी "पूँछ" को देख पाते हैं। मगर दूर पर रहते वक्त वे गोलाकार में ही दीखते हैं। इनके केन्द्र में घन पदार्थ के साथ घनीभूत वायु पदार्थ भी होता है। पर सूर्य की कांति से यह पदार्थ भाप बनकर धूमकेतु के "सर" से दूर बह जाता है और वह "पूंछ" जैसा दिखाई देता है। जैसे ग्रहों की गति को लेकर अंधविश्वास फैले हुए हैं, वैसे इन पुच्छल तारों के दिखाई देने के संबंध में भी अंधविश्वास व्याप्त हैं।

बाळ के. जंबेकर, बनीन (महाराष्ट्र)

प्रश्न : मेघ काले होते हैं, पर वर्षा का पानी सफ़ेद क्यों होता है?

उत्तर : पानी सफ़ेद नहीं होता, पर सूर्य की कांति को मेघों का पानी जब रोकता है, तब वे काले दिखाई देते हैं। पानी का कोई रंग नहीं होता।

प्रश्न : पहाड़ कैसे बनते हैं?

उत्तर : आज के वैज्ञानिक जानते हैं कि भूखण्डों के नीचे शिला की परतें होती हैं और भूखण्ड हिलते हैं। इस प्रकार हिलने से दो भूखण्डों के बीच जब टकराहट होती है, तब नीचे की शिला की परत दबकर ऊपर उभर आती है। इसी प्रकार पहाड़ों की पंक्तियां बनी हैं। हम जिस भूखण्ड को भारत देश नाम से पुकारते हैं, वह एशिया खण्ड से टकरा गया था जिससे हिमालयों की पंक्तियाँ उत्पन्न हुईं। वे और ऊपर उठती जा रही हैं। एक जमाने में हिमालय की चोटियाँ समुद्र तल में थीं, इसके प्रमाण स्वरूप आज हमें उन चोटियों पर जलचरों के अवशेष प्राप्त हो रहे हैं। लेकिन भूखण्डों के बीच टकराहट के बंद होते ही पर्वतों का बढ़ना रुक जाता है। साथ ही वर्षा, धूप, और हवा के आघातों से घटने लगते हैं। इसी प्रकार पूर्वी तटवर्ती पहाड़ घिसकर घटते जा रहे हैं।

अपरीक्षित कारकम्

[७१]

नाई ने मणिभद्र के सामने शपथ करके बताया कि उसने जो कुछ देखा है, वह किसी पर प्रकट न करेगा। इसके बाद चलते वक़्त उसने अपने मन में यों सोचा :

"दिगंबर जैन के सर पर लाठी का प्रहार करने पर वह सोने की मूर्ति के रूप में बदल जाता है, यह बात मैंने अपनी आँखों से देखी है। यह बात पहले न जानने के कारण मैं कैसा मूर्ख बना हुआ हूँ। मैं प्रति दिन छे घंटों तक तरह-तरह के मनुष्यों की हजामत बनाकर जो छे-सात चांदी के सिक्के कमाता हूँ, वे मेरी गृहस्थी के लिए पर्याप्त नहीं हैं। रोज इतने सारे दिगंबर जैन इधर-उधर घूमा करते हैं, मुझे अगर पहले ही यह बात मालूम हो जाती तो मणिभद्र जैसे मैं भी दस मिनटों में एक लाख सोने के मोहरे कमा लेता। इसमें असत्य ही क्या है कि धन कमाने में नाई वैश्य की तुलना नहीं कर सकता। मैं आज तक यही समझकर आश्चर्य करता रहा कि लोग अचानक कैसे लखपति बन जाते हैं? वे सब अपनी अक़्लमंदी और व्यापारिक दक्षता के कारण ही लखपति बनते होंगे। मगर आज मालूम हो गया कि इस वास्ते सिर्फ़ एक अच्छी लाठी, दिगंबर जैन और जोरदार वार पर्याप्त है! वैश्य तो इसलिए यह रहस्य और लोगों पर प्रकट नहीं करते कि सिर्फ़ उनकी जाति के लोग ही संपन्न हो जायें! मगर मैं असली बात जान गया। कल मैं इस गाँव के सारे दिगंबर जैनों को अपने घर निमंत्रित करूँगा और उनकी खोपड़ियाँ फोड़कर अपार सोना कमा लूँगा। वह सारा धन

खर्च कर डालूं तब भी देश में दिगंबर जैनों की क्या कमी है?"

यों विचार कर नाई ने बहुत सारी लाठियां मंगवाई और अपने घर में एक बड़ी भारी पेटी में छिपा रखीं। वह सारा दिन उसने बड़ी मुश्किल से बिताया। दूसरे दिन सवेरे नगर के एक कोने में स्थित जैन मंदिर में गया, महावीर की मूर्ति की प्रदक्षिणा की, तीन बार साष्टांग दण्डवत करके जोर से चिल्ला उठा—"जैनों की जय हो! ब्रह्मचर्य की जय हो! जिन हमारी रक्षा करें! जिन की पत्नी यशोधरा हमारी रक्षा करें!" इसके बाद वह जैन भिक्षुओं के आचार्य के पास पहुँचा। विनयपूर्वक साष्टांग प्रणाम करके बोला—"महानुभाव! आज आप अपने सारे अनुचरों को साथ ले हमारे घर दावत में पधारें।"

इस पर भिक्षुओं के गुरु ने कहा—"हे श्रावक! तुम हमें दावत पर निमंत्रण क्यों देते हो? क्या हमें पेटू ब्राह्मण समझते हो? हम किसी के निमंत्रण को स्वीकार नहीं करते! भूख लगने पर किसी गृहस्थ के घर जाकर वे जो कुछ देते हैं, हम अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए उतनी मात्रा में ही ग्रहण करते हैं।"

"भिक्षु महाराज! आप के नियम को मैं समझ गया, लेकिन कृपया मेरी प्रार्थना सुनिये! हमारे घर बहुत सारे वस्त्र पड़े हुए हैं! अपार धन है, ये सब आप को ग्रंथ तैयार करने और दान-धर्म करने में आप के लिए सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अब आप की जैसी इच्छा! अगर आप नहीं मानते तो मैं अन्य भिक्षुओं से निवेदन करूँगा।" नाई ने उत्तर दिया।

ये बातें सुन मंदिर में रहनेवाले छे भिक्षुओं ने एक स्वर में उत्तर दिया—"सुनो भाई! हम लोग तुम्हारे घर चलते हैं! तुम जो पुरस्कार देते हो, वे किसी व्यक्ति को दृष्टि में रखकर नहीं देते हो! इसलिए उन्हें ग्रहण करने में हमें कोई

आपत्ति नहीं है। तुम्हें और लोगों के पास जाने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

विचित्र बात तो यह है कि ब्रह्मचारी अकेला व्यक्ति, गृहत्यागी, समस्त को तजकर भिक्षापात्र धारण करनेवाला, दिगंबरत्व को स्वीकार करनेवाला व्यक्ति होने पर भी मानव तृष्णा से बच नहीं सकता। सब से विचित्र बात तो यह है कि वह अपने इस लोभ का बड़ी बुद्धिमत्ता के साथ समर्थन करता है। बूढ़े हो, बाल पकने, दांत टूटने, आँखों की दृष्टि के मंद पड़ने की स्थिति में भी केवल लोभ बढ़ता जाता है।

उधर नाई जैन भिक्षुओं को अपने घर के आंगन में ले गया, सारे किवाड़ बंद किये, भारी संदूक़ को खोलकर वस्त्र और धन के बदले बड़ी लाठी निकाली और भिक्षुओं के सर पर सारी ताक़त लगा कर लाठी चलाने लगा। पर आश्चर्य की बात थी कि उनमें से एक भिक्षु ने भी मणिभद्र जैसे हँसते लाठियाँ नहीं खाईं और न एक ही वार खाकर कोई मरा, इस पर नाई को बड़ा क्रोध आया।

उलटे वे जैन साधू चिल्लाते, वारों से बचने की कोशिश करते चूहों की भांति सारे आंगन में दौड़ने लगे। सारे किवाड़ बंद थे, इस कारण बचकर भागने का उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं दिया। आख़िर दो भिक्षु लाठी के वारों से चोट खाकर गिर गये। नाई यह सोचकर खुश हुआ कि वे मर गये हैं, इसलिए वे लोग सोने की मूर्तियों में बदल जायेंगे। मगर वे लोग खून से लतपथ कलेवरों के रूप में ही रह गये।

बाक़ी चार भिक्षु नाई के पैरों पर गिरकर बोले—"भाई, हमें बचाओ। हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? लूटने के लिए भी हमारे पास कुछ नहीं है। तुमने अब तक दो जनों के प्राण ले लिये। बाक़ी लोगों को कम से कम प्राणों के साथ छोड़ दो।"

नाई ने आवेश में आकर गरज कर कहा–"तुममें से एक भी सोने की मूर्ति में बदल नहीं रहा है। तुम लोग अपनी बदमाशी को बंद कर जल्दी मर करके सोने की मूर्तियों में बदल जाओ।" यों कहते नाई और आवेश में आकर अंधाधुंध उन्हें पीटने लगा।

भिक्षुओं की चिल्लाहटें सुनकर उधर से गुजरनेवाले सिपाहियों ने किवाड़ तोड़कर भीतर प्रवेश किया और चार भिक्षुओं के प्राण बचाये। तब दो लाशें, चार भिक्षु और नाई न्यायाधीश के सामने हाजिर किये गये।

न्यायाधीश ने सारी बातें सुनकर नाई से पूछा–"तुमने यह अनर्थ क्यों कर डाला?"

"कल मणिभद्र ने जो काम किया, वही तो मैंने भी किया! इसमें मेरा दोष ही क्या है?" नाई ने कहा।

"यह तुम क्या कहते हो?" इन शब्दों के साथ न्यायाधीश ने सारी बातें सविस्तार समझाने का आदेश दिया।

"कल मणिभद्र ने एक दिगंबर जैन के सर पर लाठी चलाई, तब वह सोने की मूर्ति में बदल गया था। यह दृश्य मैंने अपनी आँखों से देखा है।" इन शब्दों के साथ नाई ने सारा वृत्तांत सुनाया।

न्यायाधीश ने सिपाहियों द्वारा मणिभद्र को बुलावा कर पूछा–"क्या तुमने कल एक दिगंबर जैन का वध किया है।"

मणिभद्र ने सारा वृत्तांत सुनाया। इस पर न्यायाधीश ने सिपाहियों को आदेश दिया–"तुम लोग इस मूर्ख नाई को पकड़ ले जाकर इसे भालों से चुभो-चुभोकर मार डालो।" फिर बोला–"बात को सही ढंग से समझ न पाने की वजह से जो लोग यों मूर्खतापूर्ण काम करते हैं, उनकी यही गत होती है। प्राचीन काल में इसी प्रकार एक ब्राह्मण ने आगे-पीछे की बातें सोचे बिना एक विश्वासपात्र नेवले को खुद अपने हाथों से मार डाला है।"

इस पर मणिभद्र ने पूछा–"वह कैसी कहानी है?" न्यायाधीश ने यों सुनाया:
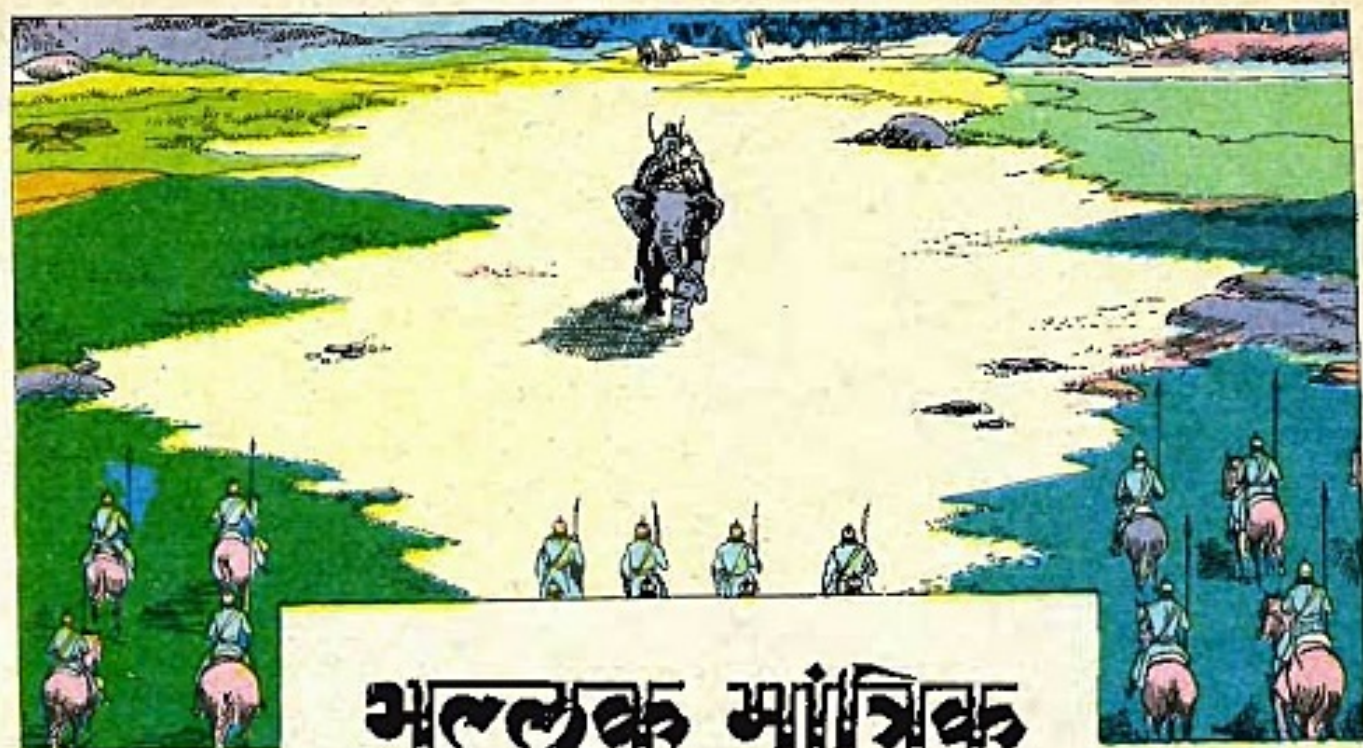
भल्लूक मांत्रिक

[११]

[राजा दुर्मुख जब जंगलों में भटक रहा था, तब उसके दुर्ग पर सामंत राजा ने अधिकार कर लिया। उसने यह इच्छा प्रकट की कि उसका सिर भल्लूक मांत्रिक के हाथ में जाने के पहले थोड़े क्षणों के लिए ही सही राजा बनने की है। बधिक भल्लूक और उग्रदण्ड के पहुँचते ही दुर्ग के भीतर से घुड़ सवार और सैनिक बाहर निकल आये। बाद···]

भाले उठाये चले आनेवाले घुड़सवारों तथा उनके बाजू में तलवार खींचे पैदल चलनेवाले सैनिकों को देख डाकुओं का सरदार नागमल्ल और उसके दो अनुचर भय कंपित हो उठे। उनके साथ ही हाथी पर सवार दुर्मुख के दो सैनिक पल भर के लिए चकित रह गये और आपस में कानापूसी करने लगे कि अब क्या किया जाय।

नागमल्ल संभल गया और अपने अनुचरों से बोला–"सुनो, मैंने नहीं सोचा था कि सामंत के इतने सारे सैनिक एक साथ युद्ध के लिए तैयार हो हम पर हमला कर बैठेंगे! फिर भी हमें डरने की कोई बात नहीं है! बधिक भल्लूक और राक्षस उग्रदण्ड हमारी रक्षा के लिए तैयार हैं।"

"मल्ल साहब! क्या हाथी को पीछे घुमाऊँ?" डाकुओं में से एक ने पूछा।
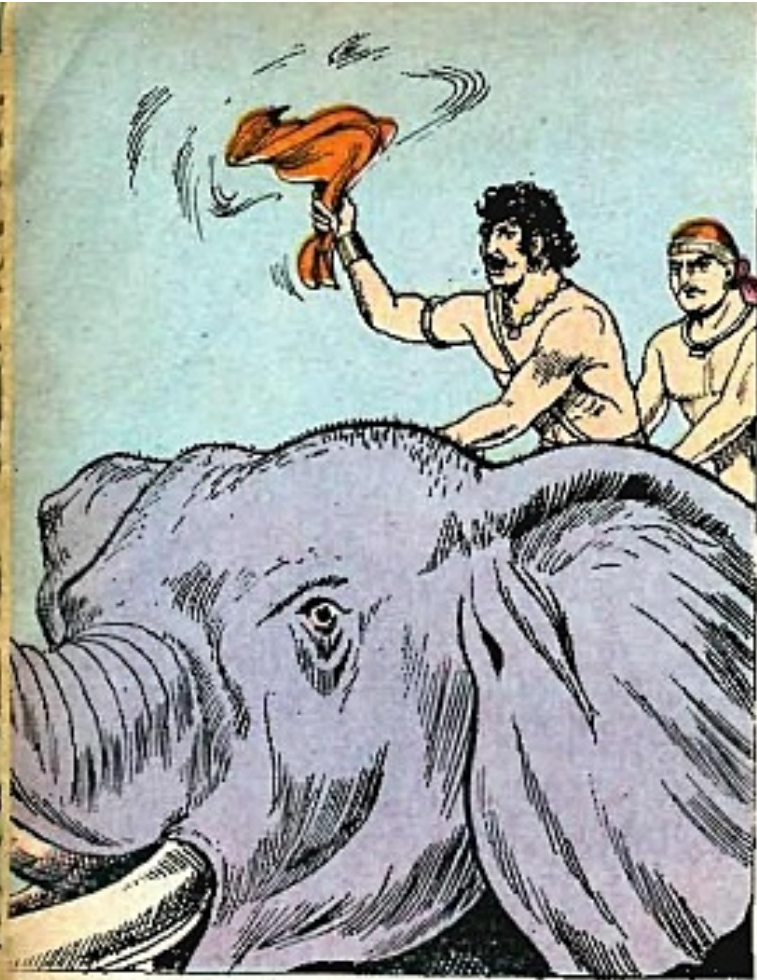
"नहीं, ऐसा करने पर हम लोग सब की नज़रों में गिर जायेंगे। मैंने जो योजना बनाई, उसका प्रयोग करके देखता हूँ, वह कहां तक सफल होती है? अगर सफल न भी हुई तो बधिक भल्लूक और राक्षस उग्रदण्ड हमारी मदद के लिए तैयार हैं ही।" नागमल्ल ने समझाया।

"तब तो उन सैनिकों के हमारे निकट पहुँचने के पहले ही कुछ करो।" एक डाकू ने कहा, फिर कानापूसी करनेवाले सैनिकों से बोला-"अबे, तुम लोग यह कानापूसी क्या कर रहे हो? क्या यहां से भागकर दुश्मन के सैनिकों में मिल जाना चाहते हो? ख़बरदार! तुम लोगों की चमड़ी निकाल दूंगा।" यों कहते उसने तलवार उठाई।

दूसरे ही क्षण नागमल्ल ने हाथी पर सवार दो सैनिकों की ओर क्रुद्ध दृष्टि दौड़ाई, फिर झट से अपनी पगड़ी खोल हवा में फड़फड़ाते अपनी ओर बढ़नेवाले सामंत के सैनिकों से बोला-"तुम लोग अपनी अपनी जगह रुक जाओ! तुम्हारे राजा कहां हैं? मैं तुम्हारा मित्र बनकर आ रहा हूँ! हम लोग पुराने राजा दुर्मुख को प्राणों के साथ बन्दी बनाकर ले आये हैं। अगर हमें कोई बढ़िया पुरस्कार दे तो राजा को सौंपकर अपने रास्ते आप चले जायेंगे।"

ये बातें सुन उनके निकट आनेवाले घुड़सवार और सैनिक भी रुक गये। घुड़सवारों का सरदार थोड़ा आगे बढ़कर बोला-"इसमें कोई दगा तो नहीं है न? तुम लोगों को जंगल पार करके इस ओर बढ़ते हुए हमारे राजा और मंत्री क़िले की दीवार पर से देख ही रहे हैं?"

"अगर हम धोखा देना चाहते, तो दिन दहाड़े मुट्ठी भर लोग तुम्हारे दुर्ग की ओर चले आते? तुम लोगों ने जिस दुर्ग पर आक्रमण किया है, उसके पुराने राजा दुर्मुख का जीवित रहना तुम्हारे आज के राजा के लिए हमेशा ख़तरनाक

ही है। इसलिए अगर तुम्हारे राजा हमें उचित पुरस्कार देकर पुराने राजा दुर्मुख को नहीं खरीदेंगे तो हम लोग फिर से जंगल में लौट जायेंगे।" नागमल्ल ने उत्तर दिया।

ये बातें सुन घुड़सवारों का नेता सोच में पड़ गया कि क्या किया जाय? फिर दो पल तक सर खुजला कर इस निर्णय पर पहुँचा कि पीछे हटना वीरों का लक्षण नहीं है, वह गरज उठा, मूंछों पर ताव देते हुए तलवार उठाये बोला—"तुम कौन हो? तुमने अपना परिचय तक नहीं दिया?"

नागमल्ल ने सोचा कि यह कोई मंद बुद्धिवाला मालूम होता है, उसने जोश में आकर पगड़ी कसकर बांध ली, तब कहा—"मेरा नाम नागमल्ल है, मगर सब कोई मुझे सरदार नागमल्ल पुकारते हैं। मेरा पेशा है, जंगल में दिखाई देनेवाले क़ीमती जानवरों और मनुष्यों को पकड़कर योग्य आदमियों के हाथ बेचना! समझे!"

"यों साफ़-साफ़ क्यों नहीं बताते? ये बातें मैं अपने राजा को सुना देता हूँ।" यों उत्तर दे घुड़सवार दल का नेता अपने घोड़े को मोड़ने को हुआ, फिर रुककर पूछा—"अच्छा, यह बताओ कि तुम्हारे पीछे दूर पर जो भीड़ है, उसमें राक्षस जैसा एक व्यक्ति है और परसु हाथ में लिये हुए एक भालू है, क्या वे सचमुच राक्षस और भालू हैं? या हमारे मंत्री साहब के कहे मुताबिक़ बहुरूपिया हैं?"
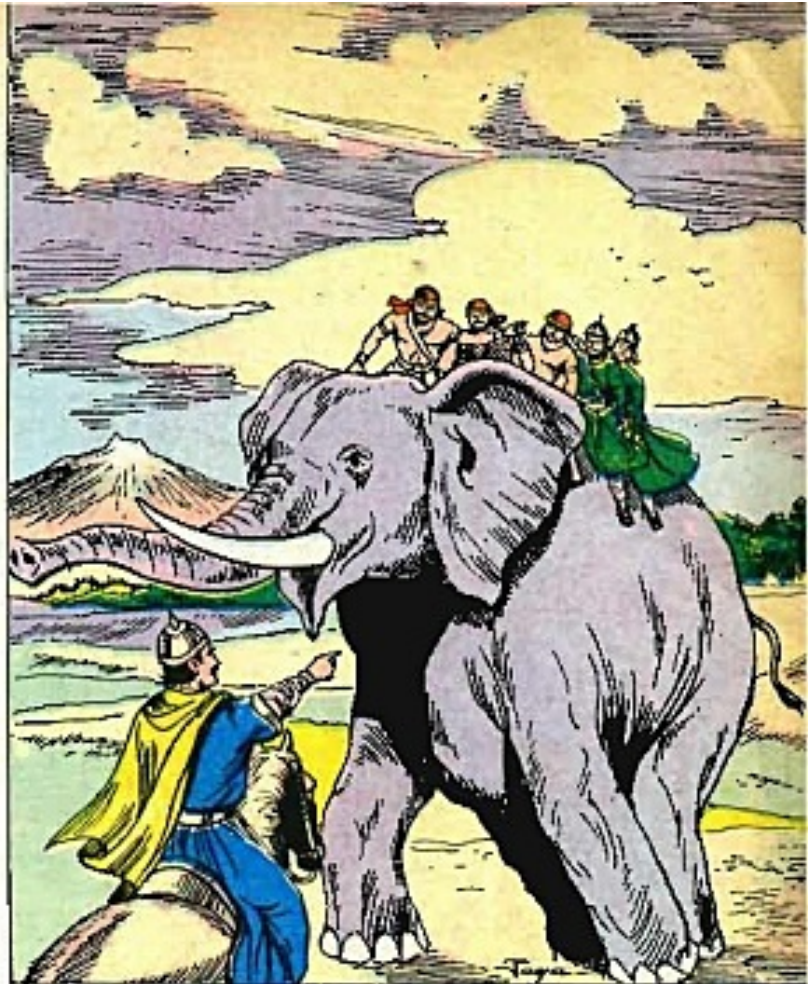
"यह बात जाननी है तो तुम्हारे राजा को खुद यहाँ पर आना उचित होगा! मैं उनके हाथ से पुरस्कार लेकर पुराने राजा दुर्मुख को उनके हाथ सौंप दूँगा और राक्षस तथा भालू वेषधारियों का उन्हें परिचय कराऊँगा।" नागमल्ल ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।

घुड़सवार दल के नेता ने तृप्ति के साथ सर हिलाया, तब तलवार उठाकर सैनिकों से बोला—"अबे, सुनो! तुम

लोगों ने अगर अपनी जगह से एक भी क़दम आगे या पीछे हटाया, तो तुम्हारे सिर धड़ से अलग हो जायेंगे। हमारे मंत्री साहब की कल्पना के अनुसार ये लोग बहुरूपिये हैं! मैं अभी जाकर हमारे राजा को यह समाचार दे आता हूँ।" यों समझा कर दुर्ग के खुले द्वार की ओर उसने अपने घोड़े को दौड़ाया।

उधर दुर्ग के बुर्ज के बाजू में खड़े हो सामंत राजा और उसके मंत्री यह सारा तमाशा देख रहे थे। घुड़सवार दल के सरदार को अपने समीप आते ही बोले– "सुनो, तुम दुश्मन पर हमला न करके उनके साथ मंत्रणा क्यों कर रहे थे?"

घुड़सवार दल के सरदार ने उन्हें सारा वृत्तांत सुनाकर कहा–"महाराज! वे लोग बताते हैं कि हम उन्हें छोटा-मोटा पुरस्कार दे तो वे लोग हमें राजा दुर्मुख को सौंपकर लौट जाना चाहते हैं।"

राजा दुर्मुख का नाम सुनते ही सामंत राजा चौंक पड़ा और बोला–"क्या राजा दुर्मुख अभी तक जिंदा है? तो इसका मतलब है कि हमारे भेदियों ने जो ख़बर दी कि दुर्मुख किसी ख़ूंख्वार जानवर का आहार बन गया है, यह झूठ है? महामंत्री! तुम इसी वक़्त उन भेदियों के सर कटवाने का आदेश दे दो।"

मंत्री ने चिंतापूर्ण चेहरा बनाकर कहा– "महाराज! वे दोनों भेदिये इस वक़्त क़िले में नहीं हैं। उन्हें मैंने फिर से जंगल में भेज दिया है! एक बात और है, महाराज! गंभीरता पूर्वक विचार करने पर ऐसा लगता है कि वह राक्षस और भालू वेषधारी बहुरूपिये नहीं हैं। मेरा संदेह है कि वे दोनों सच्चे हैं! सब से बढ़कर शंका की बात यह हो सकती है कि ये लोग जिस दुर्मुख राज़ा को बन्दी बनाकर ले आये हैं, वे शायद असली राजा न हो।"

मंत्री के मुंह से ये बातें सुन सामंत क्रोध के मारे आपाद मस्तक कांप उठा और बोला–"यह मेरी बड़ी भारी भूल

थी कि मैंने इस दुर्ग पर अधिकार करने के बाद तुम्हें सलाहकार के पद से मंत्री के पद पर नियुक्त किया है। तुम किसी सामंत राजा को सलाह देने की योग्यता रखते हो, पर महाराजा को सलाह देने की सामर्थ्य तुम में नहीं है।" फिर घुड़ सवार दल के सरदार की ओर मुड़कर बोला–"हे महासेनापति! मुट्ठी भर उन कमबख्त लोगों के साथ हम समझौता क्यों करें? तुम उन्हें चेतावनी दो कि चुपचाप वे हमारी अधीनता को स्वीकार कर ले, वरना उन्हें बन्दी बनाकर हमारे क़िले के भीतर उन्हें खींच ले आओ। पुरस्कार की बात हम फिर सोच लेंगे।"

"महाराज! अगर वह सच्चा राक्षस हो तो हमारे लिए ख़तरा होगा न!" घुड़ सवार दल के सरदार ने भर्राई हुई आवाज में जवाब दिया।

इस पर सूर्यभूपति ने जोर से दांत भींचकर कहा–"तुम्हारे साथ जो फ़ौज है, उसकी मदद से तुम एक राक्षस क्या, सौ राक्षसों को भी बन्दी बना सकते हो! चलो, मैं ही खुद चलता हूँ! मेरा युद्धवाला घोड़ा कहाँ पर है?" यों कहते वह बुर्ज पर से जल्दी-जल्दी नीचे उतर पड़ा।

एक सैनिक घोड़ा ले आया, तब सूर्य भूपति उछलकर उसकी पीठ पर बैठ

गया। मंत्री भी समीप के एक और घोड़े पर सवार हो गया। आगे-आगे सामंत राजा और बाजुओं में मंत्री तथा सेनापति घोड़ों पर चलते दुर्ग के द्वार को पार कर मैदान में पहुँचे।

उन्हें आगे बढ़ते देख डाकू नागमल्ल उत्साह में आकर बोला–"ओह! मेरी योजना सफल हो गई है। सामंत राजा, मंत्री और सेनापति हमारे जाल में फंसने जा रहे हैं।"

"नागमल्ल! इन तीनों को बन्दी बनाकर सौंपने पर क्या राजा दुर्मुख हमें बढ़िया पुरस्कार देंगे?" डाकुओं ने पूछा।

"पुरस्कार क्या? तुम्हें तो राजा दुर्मुख एक रियासत ही दे डालेंगे।" यों कहते दो सैनिक म्यानों में से तलवार खींचकर हमला करने को हुए, पर नागमल्ल की चेतावनी पाकर रुक गये।

सामंत राजा सूर्यभूपति नागमल्ल के हाथी के समीप पहुंचकर बोला—"अरे, हमारे महा सेनापति के मुंह से तुम्हारी सारी बातें मैंने सुन ली हैं। तुम मेरे राज्य में, मेरे क़िले के आगे पहुँचकर इसके महाराजा बने मेरे साथ सौदा करना चाहते हो? तुम इसी वक़्त जाकर हाथियों पर सवार दुर्मुख के साथ उन बहुरूपियों को भी बुला लाओ। क़िले में जाने के बाद तुम्हें तथा उस राक्षस और भालू के वेषधारियों को उचित पुरस्कार दे दूंगा। लेकिन यह निर्णय मैं बाद को लूंगा कि दुर्मुख का सिर क़िले की चोटी पर लटकवा देना है या क़िले के द्वार पर?"

सामंत राजा के मुंह से ये बातें सुनने पर डाकू नागमल्ल को लगा कि उसकी योजना सफल नहीं हो सकती। वैसे वह राजा दुर्मुख और उसके दुर्ग पर अधिकार करनेवाले सूर्यभूपति के प्रति कोई विशेष ईर्ष्या या आदर का भाव नहीं रखता था। लेकिन सूर्यभूपति घमण्ड में आकर राक्षस उग्रदण्ड या बधिक भल्लूक का अपमान कर बैठेगा तो खून-खराबी होगी। ऐसा होना डाकू नागमल्ल को कदापि पसंद न था।

नागमल्ल सोच ही रहा था कि इसका क्या जवाब दे, तभी हाथी पर सवार दुर्मुख के दो सैनिक झट से तलवार खींचकर चिल्ला उठे—"महाराजा दुर्मुख की जय!" हे सूर्यभूपति! तुम्हारी मौत निश्चित है! महाराजा दुर्मुख की मदद करने आये हुए लोगों में एक सच्चा राक्षस है और दूसरे मंत्र-शक्तियाँ रखनेवालें बधिक भल्लूक हैं।"

दुर्मुख राजा के जयकार सुनते ही क्रोध में पागल हो सामंत सूर्य भूपति अपने

सैनिकों की बातों पर ध्यान दिये बिना बाजू में खड़े मंत्री तथा सेनापतियों से बोले–" सुनो! इन घमण्डियों तथा उनके पीछे खड़े हो तमाशा देखनेवाले बहुरूपियों को मेरी ताक़त का मजा चखाना होगा। तुम लोग तुरंत कुछ घुड़ सवारों और पैदल सिपाहियों को बुलवाकर उन्हें जंगल में भागने से घेरने का आदेश दो।" यों चेतावनी दे तलवार खींचकर सामंत ने डाकू नागमल्ल के हाथी की ओर अपने घोड़े को दौड़ाया।

पल भर में होनेवाले खतरे को भांपकर नागमल्ल ने झट से अपने हाथी को हांककर पीछे घुमाया, उग्रदण्ड और बधिक भल्लूक के समीप ले जाकर चिल्ला उठा–" बधिक भल्लूक प्रभू! मेरी योजना असफल हो गई। सामंत राजा अपनी सारी सेना को हम पर उकसा रहा है।"

सूर्यभूपति ने मंत्री का अपमान किया था, फिर भी अपनी राज भक्ति को साबित करने के ख्याल से मंत्री ने अपने घोड़े को ललकारा, नागमल्ल के हाथी के पीछे दौड़ाते चिल्ला उठा–" अरे देश द्रोहियो! सावधान हो जाओ! हमारे महाराजा सूर्यभूपति तुम सबों के सिर काटकर ही छोड़ देंगे।"

इस बीच सेनापति ने दूर खड़ी सेना को आगे बढ़ने का आदेश दिया। तब तक आगे-आगे मंत्री तथा उसके पीछे सामंत सूर्यभूपति उग्रदण्ड और बधिक भल्लूक के समीप आ पहुँचे।

अपने दुर्ग पर अधिकार करनेवाले सूर्यभूपति को देखते ही राजा दुर्मुख क्रोध से भर उठा, तलवार खींचकर हाथी पर खड़े हो ललकारा–" अरे सामंत सूर्यभूपति, मुझे पराये देशों पर आक्रमण करने गये देख तुम मेरे ही क़िले पर अधिकार कर बैठते हो? देखो! मैं अभी तुम्हारा सिर काटने जा रहा हूँ!" यों कहते अपने सैनिकों के मना करने पर भी ध्यान दिये

बिना अपने हाथी पर से सामंत के घोड़े पर कूदने को हुआ, पर इस कोशिश में जमीन पर औंधे मुंह गिर पड़ा और दूसरे ही क्षण झट उठ खड़ा हो गया।

इसे देख बधिक भल्लूक ने जोर से तालियाँ बजाकर कहा–"वाह! राजा की यह कैसी हिम्मत है! जंगल में चीते का सामना करने की हिम्मत न रखनेवाला राजा दुर्मुख अब अपने क़िले को देखते ही सिंहासन की याद करके दुश्मन पर उछल-कूद कर रहा है।"

अपने दुश्मन को नीचे गिरकर उठते देख सूर्यभूपति ख़ुशी से भर उठा और बोला–"हाँ, कहा जाता है कि दुश्मन को ज़िंदा रखना ख़तरे से खाली नहीं है। लो, देखो, अभी तुम्हारा सिर कटकर मिट्टी में लोटने जा रहा है।" यों कहते तलवार खींचकर सामंत ने दुर्मुख की ओर अपने घोड़े को दौड़ाया।

उसी वक़्त हाथी पर बधिक भल्लूक के आगे बैठे जंगली युवक तीर का निशाना लगाकर चिल्ला उठा–"बधिक भल्लूक साहब की जय!" और सामंत पर छोड़ दिया। बाण का निशाना चूक गया और सामंत के घोड़े के माथे पर जा चुभा। घोड़ा जोर से हिन-हिनाते अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो गया।

सामंत सूर्यभूपति नीचे गिरने को हुआ, मगर लगाम खींचकर ख़तरे से बच गया। इस बीच दुर्मुख ने अपने मुक्के से मंत्री को घोड़े पर से नीचे गिराया, उसके घोड़े पर सवार हो सामंत की ओर दौड़ाया।

सामंत ने भांप लिया कि वह दुश्मन के बीच फंस गया है, घबराकर अपने घोड़े को क़िले की ओर दौड़ाते सैनिकों को चेतावनी देने लगा। राजा दुर्मुख घोड़े को ललकारकर तलवार उठाये भयंकर रूप से गरज उठा–"अरे सामंत भूपति! कायर! रुक जाओ! हिम्मत हो तो मेरे साथ लड़ो।" यों कहते सामंत का पीछा करने लगा। (और है)

मानवता

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ पर से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन! इस संसार में अपराध का दण्ड नहीं होता। इसके प्रमाण स्वरूप में आप को जग्गू नामक डाकू की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: एक जमाने में कांचीपुर में एक डाकू बड़ी कुशलता के साथ दिन दहाड़े चोरियाँ करने लगा। दिन के वक़्त ही दूकानों में आये हुए ग्राहकों का धन और दूकानदार का धन भी एक दम गायब हो जाता था। सरायों में भी चोरियाँ हुआ करती थीं। ख़ासकर व्यापारी, किसान और राज कर्मचारी दिन दहाड़े होनेवाली चोरियों के शिकार हो जाते थे। पर घरों में रहते

बेताल कथाएँ

वक़्त उनकी संपत्ति के खो जाने का कोई खतरा न होता था।

इन चोरियों के बारे में नगर रक्षक के पास कई शिकायतें पहुँचीं। उसने चोरों का पता लगाने के लिए भेदियों को नियुक्त किया, पर कोई फ़ायदा न रहा। उस डाकू का नाम जग्गू था। उसे देख कोई भी डाकू मान नहीं सकता था। उसके हाथ का कौशल अद्भुत था।

जग्गू को राजकर्मचारी इसलिए पकड़ न पाये, क्योंकि वह एक साधारण चोर न था, अन्य चोरों की भांति वह चोरियाँ नहीं करता, उसके द्वारा लुटनेवाले लोग उसे देख चोर कभी नहीं मानते थे।

एक बार जग्गू ने सड़क के बीच एक व्यक्ति की धन की थैली हड़प ली। उसमें धन के साथ एक चिट्ठी भी थी। वह एक औरत की लिखी हुई चिट्ठी थी। उसमें दिल को छूनेवाली शैली में लिखा हुआ था कि उसका पति मौत की घड़ियाँ गिन रहा है, इलाज के लिए रुपयों की ज़रूरत आ पड़ी है। जल्द ही रुपये भेजकर उसके सिंदूर की रक्षा करे।

उस चिट्ठी को पढ़ने पर जग्गू का दिल दहल उठा। वह चोरी का माल लेकर उस औरत के घर पहुँचा। उसने ज्यों ही उस घर में क़दम रखा, त्यों ही सिपाहियों ने उसे घेरकर बंदी बनाया। उसी वक़्त जग्गू ने जिस व्यक्ति की थैली चुराई थी, वह व्यक्ति भी भीतर से आ पहुँचा। वह छद्म वेश में रहनेवाला नगर रक्षक था। दिन दहाड़े चोरियाँ करनेवाले डाकू को पकड़ने के लिए वह इधर एक महीने से वेश बदलकर धन की थैली के साथ नगर में चक्कर लगा रहा था। इतने दिनों बाद उसकी चाल चल गई थी। आखिर दिन का चोर हाथ लग गया।

अदालत में जग्गू की सुनवाई हुई। यह साबित हुआ कि वह दिन में चोरियाँ करनेवाला नामी चोर है। मगर नगर

रक्षक ने जग्गू को दण्ड नहीं दिया। जग्गू के द्वारा यह शपथ कराकर कि आइंदा वह चोरियाँ नहीं करेगा, उसे छोड़ दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, नगर रक्षक ने इतनी सारी मेहनत उठाकर दिन दहाड़े चोरियाँ करने वाले चोर को बन्दी बनाकर भी दण्ड दिये बिना उसे क्यों छोड़ दिया? दिन के चोर को दण्ड देने का अगर उसका कोई उद्देश्य न था तो उसे बन्दी बनाना और उसका सुनवाई करना व्यर्थ ही तो था? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आप का सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "दिन दहाड़े चोरियाँ करनेवाले चोर को पकड़ने में नगर रक्षक ने कोई विशेष मेहनत नहीं उठाई। चोर अगर सच्ची मानवता न रखनेवाला हो तो नगर रक्षक की चाल के चलने की कोई संभावना नहीं है। मानवता रखने के कारण अगर चोर हाथ लग जाता है तो उसे कठिन दण्ड देना संभव नहीं है। नगर रक्षक के द्वारा जग्गू को छोटा-सा भी दण्ड दिये बिना मुक्त करने तथा सार्वजनिक रूप में उसकी सुनवाई करने के पीछे एक कारण जरूर है। कोई यह नहीं जानता था कि जग्गू कैसे होता है? जब उसकी आकृति का पता सब लोगों को लग गया, तब उसके द्वारा दिन में चोरियाँ करना संभव नहीं है। यह बताने के लिए नगर रक्षक ने सार्वजनिक रूप से उसकी सुनवाई कराई कि यही दिन में चोरियाँ करनेवाला चोर है। जब सब को यह मालूम हो गया कि जग्गू कौन है? तब उसके द्वारा दिन में चोरियाँ करना नामुमकिन है। इसलिए उसे दण्ड दिये बिना नगर रक्षक ने मुक्त किया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
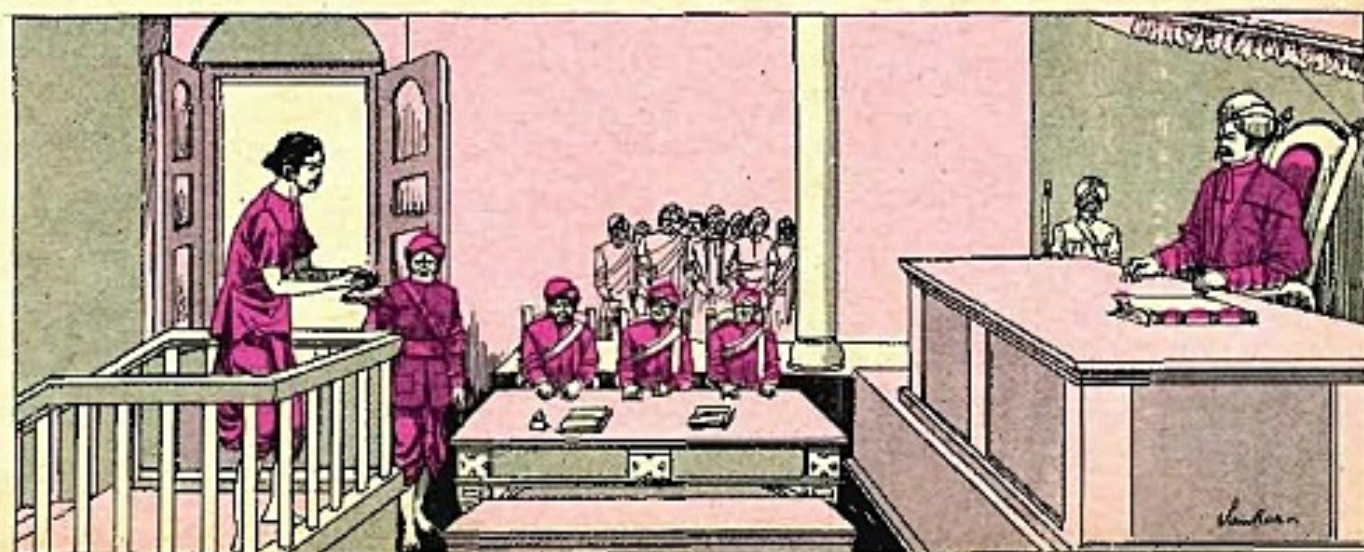
मंत्री का पद

कांभोज देश के महा मंत्री सुमंत एक बहुत बड़े मेधावी थे। उनके मन में एक बार यह विचार आया कि अपने अनंतर मंत्री के पद पर काम करने के लिए एक समर्थ व्यक्ति को चुनकर उसे

ईमानदार नौकर

विश्वनाथ गोलक के पास बैठकर रुपयों की गिनती कर रहा था, तभी उसकी पत्नी लक्ष्मी ने प्रवेश करके कहा—"अभी तक हमारी बकरियाँ लौटकर नहीं आई हैं। नये नौकर पर हमने विश्वास करके उसके साथ बकरियों को चराने भेज दिया है। अगर बकरियाँ लौट न आईं तो हम क्या करें?"

बात यह थी कि विश्वनाथ अपनी बकरियों को चराने के लिए इधर बहुत दिनों से एक लड़के की खोज कर रहे थे, इस पर उसके मित्र रामदास ने गोपी नामक एक लड़के की सिफ़ारिश करके उसके घर भेज दिया। गोपी उसी दिन पहली बार बकरियों को चराने ले गया। बकरियों के लौटने का वक़्त हो गया था, पर गोपी का कहीं पता न था। और न उसके लौटने की उन्हें कोई उम्मीद ही थी।

विश्वनाथ ने अपनी पत्नी को समझाया—"अगर लड़का ईमानदार न होता तो क्या मेरे दोस्त रामदास उसे हमारे यहाँ भेज देते? घबड़ाने की कोई बात नहीं है। तुम जाकर अपना काम देख लो।"

लेकिन इसके बाद विश्वनाथ के मन में भी शक हुआ, अगर यह लड़का बकरियों के साथ भाग जाये तो हम कर ही क्या सकते हैं?

थोड़ी देर बाद विश्वनाथ अपना काम पूरा करके घर के बाहर चबूतरे पर आ बैठा, तब तक गोपी बकरियों के साथ लौट आया। इस पर विश्वनाथ और लक्ष्मी के दिल ठण्डे पड़ गये।

गोपी वैसे देखने में भोला-भाला जरूर है, साथ ही वह ईमानदार लगता है। फिर भी उसकी परीक्षा लेना उचित होगा। यों विचार कर दो-तीन दिन

रमेश वर्मा

लगातार वह छुट्टे पैसे घर में इधर-उधर ऐसे डालता गया जिससे गोपी की नज़र में पड़ जाय! गोपी उन पैसों को उठाकर विश्वनाथ के हाथ देता गया। इससे गोपी पर विश्वनाथ का विश्वास और जम गया।

इस पर विश्वनाथ ने अपनी पत्नी को समझाया—"तुम अनावश्यक उस पर शक मत करो, वह तो बड़ा ईमानदार लड़का है!"

"पहले तो सब लोग अच्छे ही दीखते हैं, थोड़े दिन जाने पर उनका असली रंग प्रकट होगा।" लक्ष्मी ने कहा।

गोपी की आखिरी बार परीक्षा लेने के ख्याल से विश्वनाथ ने अपने एक मुसलमान मित्र को थोड़े रुपये देकर कुछ समझाकर भेज दिया।

गोपी जंगल में बकरियों को चराने जब गया, तब वह मुसलमान दोस्त उसके पास पहुँचा और बोला—"सुनो भाई, मैं दस रुपये दे देता हूँ, क्या तुम मुझे एक बकरी दोगे?"

"साहब, ये बकरियाँ मेरी नहीं हैं। हमारे मालिक के पास जाकर पूछिये।" गोपी ने जवाब दिया।

मुसलमान ने बकरी का दाम बढ़ाकर आखिर एक बकरी के लिए सौ रुपये देने की बात कही। गोपी ने थोड़ी देर तक सोच विचार कर तब कहा—"अच्छी बात है, आप सौ रुपये दे दीजिए!" यों कहकर सौ रुपये लेकर गोपी ने मुसलमान के हाथ एक बकरी पकड़ा दी।

शाम को बकरियों के साथ जब गोपी घर लौटा, तब विश्वनाथ के पास जाकर बोला—"मालिक! एक बुड्ढ़े साहब ने सौ रुपये देकर हमारी एक बकरी को खरीद लिया है, ये रुपये लीजिए। इन रुपयों से हम तीन बकरियाँ खरीद सकते हैं न? यही सोचकर मैंने बकरी बेच दी है।" यों समझाकर गोपी ने सौ रुपये विश्वनाथ के हाथ धर दिये।

इसके बाद विश्वनाथ या लक्ष्मी ने फिर कभी गोपी पर शक न किया।
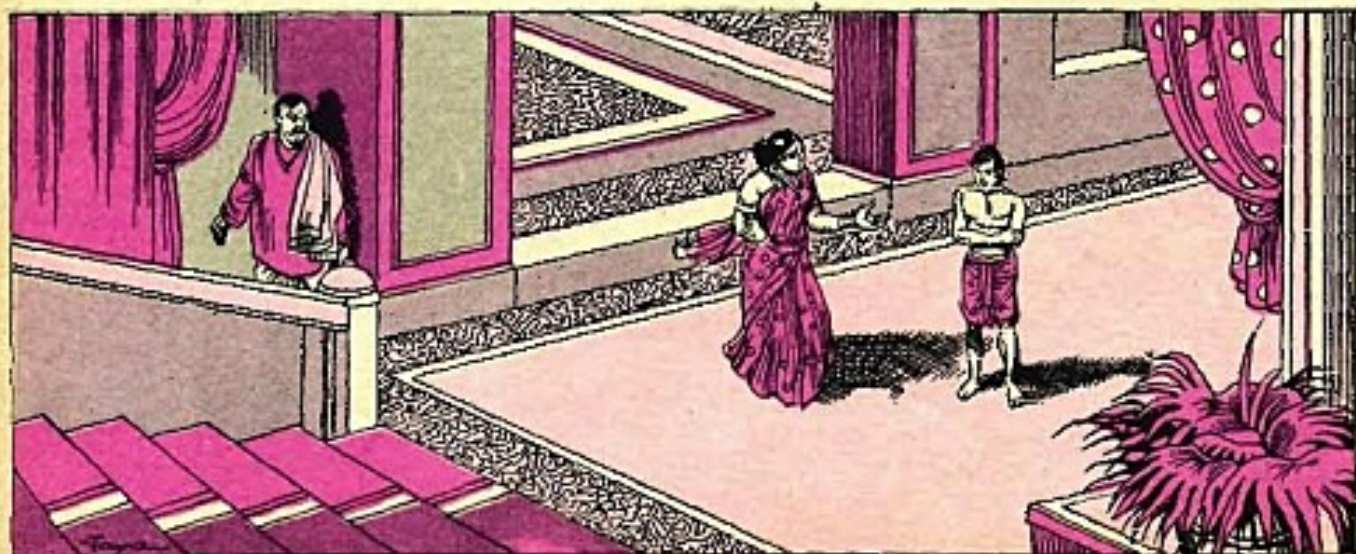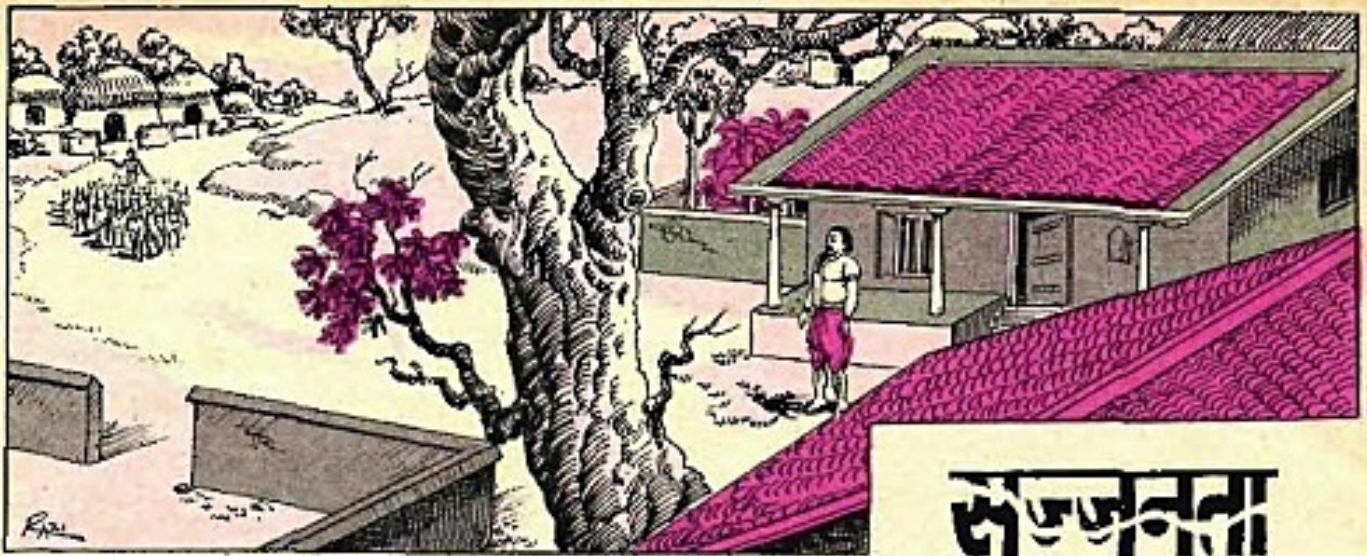
सज्जनता

रघुराम नामक जमीन्दार के यहाँ चन्द्रभानु नामक युवक नौकरी पर लग गया। चन्द्रभानु पहले से ही जानता था कि रघुराम क्रोधी और क्रूर स्वभाव का है। रघुराम के यहाँ काम करनेवाले दूसरे नौकरों ने चन्द्रभानु को कई तरह से समझाया कि वह रघुराम के यहाँ नौकरी में न लगे, लेकिन चन्द्रभानु ने उनकी सलाह न मानी।

चन्द्रभानु जब से काम पर लगा, तब से रघुराम की डांट-डपट शुरू हो गई। उसे न ठीक से खाने देता था और द पल भर भी आराम करने देता था। जब देखो नाकों दम कर देता था। कभी चन्द्रभानु को खाना खाते देख रघुराम उसे उठा देता और कोई न कोई काम सौंप देता। पर चन्द्रभानु हँसते-हँसते उठकर चल देता। आधी रात के वक्त भी जमीन्दार चन्द्रभानु को जगाकर कोई न कोई काम सौंप देता, चन्द्रभानु मुस्कुराते उठकर चला जाता और वह काम उसी वक्त पूरा कर देता।

कभी कोई गाय दूध न देती तो जमींदार चन्द्रभानु को खरीखोटी सुना देता। एक बार खेत में किसी एक कोने में फसल झुलस गई तो रघुराम ने बिना किसी वजह के चन्द्रभानु को पीटा। इसी प्रकार एक बार बिल्ली ने एक मुर्गी का गला कुतर दिया तो जमीन्दार ने चन्द्रभानु को बुरी तरह से पीटा।

इस प्रकार जमीन्दार ने अनेक प्रकार से चन्द्रभानु को सताया, पर वह हँसते-हँसते उन सब को सहन कर लेता था। रघुराम ने कभी इस बात पर विचार नहीं किया कि आखिर चन्द्रभानु क्यों ये सब डांट-डपट, और मार सहनकर चुप पड़ा रहता है।

मगर जमीन्दार के द्वारा चन्द्रभानु को सताते देख जमीन्दार की पत्नी दुखी हो

जानकी प्रसाद

उठी। पत्नी होने के कारण उसे सहन करना लाचारी है। इसके पहले कई नौकर जमीन्दार के व्यवहार से तंग आकर अपना वेतन लेकर भाग गये थे। मगर चन्द्रभानु ने ऐसा नहीं किया और वह जमीन्दार के घर टिका रहा। जमीन्दार की पत्नी को लगा कि चन्द्रभानु यातनाएँ झेलते हुए भी यह अनुभव नहीं करता है कि वह यातनाएँ भोग रहा है। चन्द्रभानु उत्साहपूर्वक घर के काम-काज करने के साथ खेत के काम भी देखता है। उसका काम, निष्ठा और कुशलता देखनेवाले लोगों को आश्चर्य होता था कि आखिर जमीन्दार उसके साथ ऐसा निर्दयतापूर्ण व्यवहार क्यों करते हैं!

आखिर हिम्मत करके जमीन्दार की पत्नी ने एक दिन चन्द्रभानु को गुप्त रूप से बुलाकर समझाया–"अरे, तुम जैसे सज्जन व्यक्ति को तुम्हारे मालिक नाना प्रकार से सता रहे हैं। गालियाँ देते हैं, पीटते हैं, तुम इन सब को क्यों भोगते हो? तुम्हें तुम्हारे वेतन के साथ थोड़े रुपये इनाम के रूप में ज्यादा देती हूँ। कहीं जाकर आराम से जी लो।"

"आप यह क्या कहती हैं, माईजी? आप तो मेरे लिए माता जैसी हैं, मालिक मेरे लिए पिता के समान हैं। मुझे वे कुछ भी डांटे, पीटे, मेरे प्रति उनके मन में प्रेम होता है। मुझ पर उन्हें क्रोध क्यों होगा? वे मेरी भलाई चाहकर ही ये सब करते हैं। आप लोगों की सेवा करते मैं अपने दिन काटूंगा। यही मेरे लिए सब कुछ है।" चन्द्रभानु ने कहा।

ये बातें आड़ में रहकर सुननेवाले रघुराम को लगा कि उसके कलेजे पर कोई शूल चुभो रहा है। उसके पुत्र ने भी जो विश्वास जमीन्दार के प्रति दिखाया न था, उसे चन्द्रभानु ने दिखाया। उस दिन से जमीन्दार चन्द्रभानु को न केवल अपने पुत्र के समान मानने लगा, बल्कि अपने क्रोध, खीझ आदि को भी त्यागकर सब के साथ अच्छा व्यवहार करने लगा।
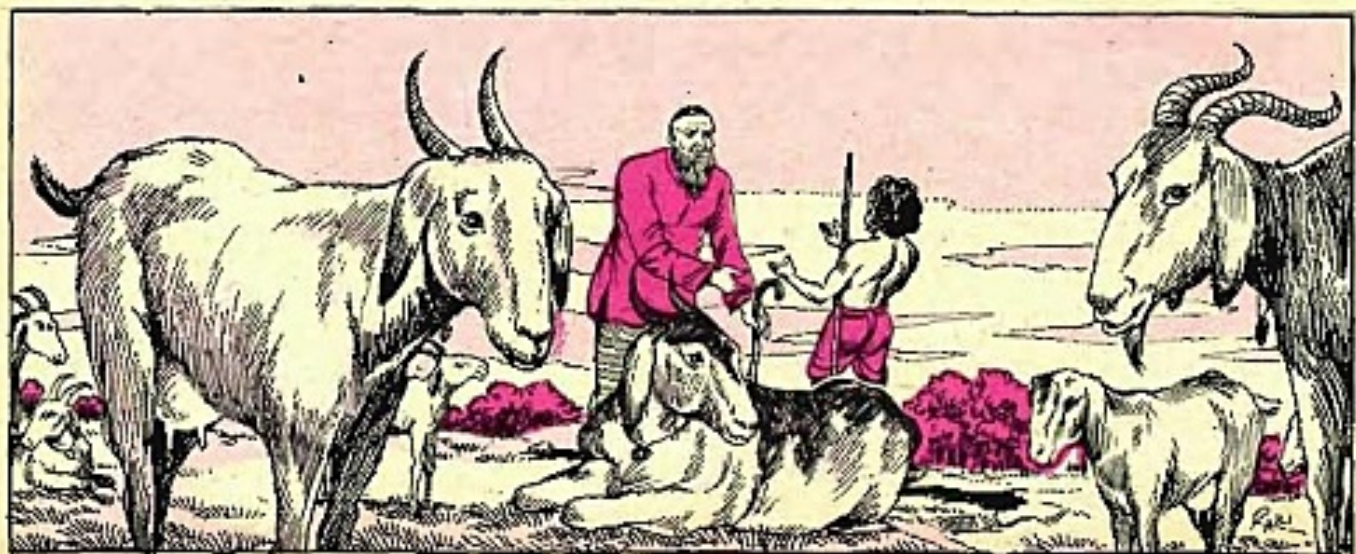
भगवान को दगा?

एक गाँव में शंभूदास नामक एक व्यापारी था। वह प्रति दिन दूकान बंद करते वक्त सारे रुपये गोलक में डालकर यह मनौती किया करता था कि इसका धन कोई न उठावे तो भगवान को एक नारियल फ़ोड़ दूंगा।

यों एक महीना बीत गया, लेकिन शंभूदास ने भगवान को एक भी नारियल नहीं फोड़ा। इस पर भगवान ने सपने में शंभू को दर्शन देकर पूछा—"इतने दिन बीत गये। मैं तुम्हारे धन की रक्षा करता हूँ। तुमने मुझे एक भी नारियल नहीं फोड़ा। बात क्या है?"

"भगवान, मैं क्या करूँ? अगर मुझे नारियल फोड़ना हो तो पैसे देकर उसे खरीदना पड़ेगा। खरीदना हो तो गोलक से पैसे मुझे निकालने हैं न? मैंने इसीलिए नारियल फोड़ने की सच्चे दिल से मनौती की थी कि गोलक के रुपये सुरक्षित रहें!" शंभूदास ने इतमीनान से जवाब दिया।

ये बातें सुन भगवान आश्चर्य में आकर अदृश्य हो गये।

दुस्साहस

चंपा जब छोटी-सी बच्ची थी, तभी उसकी माँ स्वर्ग सिधारी, पिता ने उसे बड़े ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा, वह बड़ी ही हिम्मतवाली लड़की थी। अंधेरी रात में अकेली जाती, हवा के न लगने का बहाना करके पिछवाड़े के किवाड़ खोलकर सो जाती। किसी की परवाह न करती, जो मन में आया, कह देती।

चंपा जब शादी के योग्य हो गई तब उसके पिता राजनाथ के लिए उसका व्यवहार सर दर्द-सा बन गया। उसने कई बार अपनी बेटी को समझाया—"बेटी, यह तुम जो दुस्साहस करती हो, यह ख़तरे से खाली नहीं है।" मगर चंपा सिर्फ़ मुस्कुराकर रह जाती।

चंपा की शादी का रिश्ता क़ायम करने के ख़्याल से पड़ोसी गाँव में जाते हुए राजनाथ ने उसे चेतावनी दी—"बेटी! रात के वक़्त बहुत ही सतर्क रहो, घर में अकेली रहती हो!"

"बापू! मुझे हर बात में यों क्यों कायरता का पाठ पढ़ाते हो? डरने की कोई बात नहीं है। तुम निश्चिंत रहो!" चंपा ने खीझकर कहा।

राजनाथ ने फिर भी सावधानी बरतने के ख़्याल से सारे रुपये व गहने पोटली बनाकर एक पुराने कपड़े में लपेट दिया, तब उसे अटारी पर रखकर चला गया। अपने पिता की सावधानी का मज़ाक़ करते पिता के जाते ही उसने किवाड़ बंद किये। खाना खाकर वह लेट गई।

थोड़ी देर बाद चंपा को झपकी आ गई, तभी किसी ने पिछवाड़े की ओर से किवाड़ पर दस्तक दिया। चंपा ने उठकर किवाड़ खोला। बाहर पच्चीस साल का एक युवक खड़ा था।

सुधाकर अरोरा

चंपा ने गरजकर पूछा–"तुम कौन हो! तुम्हें क्या चाहिए?"

वह युवक चुपचाप झट से भीतर आया, पिछवाड़े के किवाड़ बंद करके छुरी दिखाकर बोला–"तुम्हारे घर में जो कुछ गहने और रुपये हैं, चुपचाप दे दो!"

चंपा चकित रह गई और उसके मुँह से बोल नहीं फूटे। चोर ने छुरी दिखाकर धमकी दी–"तुम यह कपट नाटक मत रचो, मेरे कहे मुताबिक़ करो।"

"हमारे घर में रुपये ही कहाँ हैं? जो कुछ था, उसे मेरी शादी का रिश्ता क़ायम करने ले गये हैं!" चंपा ने जवाब दिया।

पर चोर ने उसकी बातों पर यक़ीन नहीं किया, उसने सारे संदूक़ खुलवाये, कहीं एक कौड़ी भी हाथ न लगी, चंपा अपने पिता की अक़्लमंदी पर मन ही मन खुश हो गई। पर चोर ने गुस्से में आकर चंपा के गले की माला तोड़ डाली और पिछवाड़े के किवाड़ बाहर से बंद करके भाग गया। वह माला हाल ही में राजनाथ ने काफी रुपये खर्च करके चंपा की शादी के वास्ते ख़रीद ली थी। उसके खो जाने पर चंपा को बड़ा दुख हुआ और वह रो पड़ी।

उसका हठीलापन नुक़सान का कारण बना। दूसरे दिन अपने पिता के लौटते ही चंपा ने सारा समाचार उसे सुनाया।

पिता राजनाथ ने उसे समझाया– "बेटी, अब पछताने से क्या फ़ायदा? हिम्मत का मतलब बेवकूफ़ी नहीं है, आधी
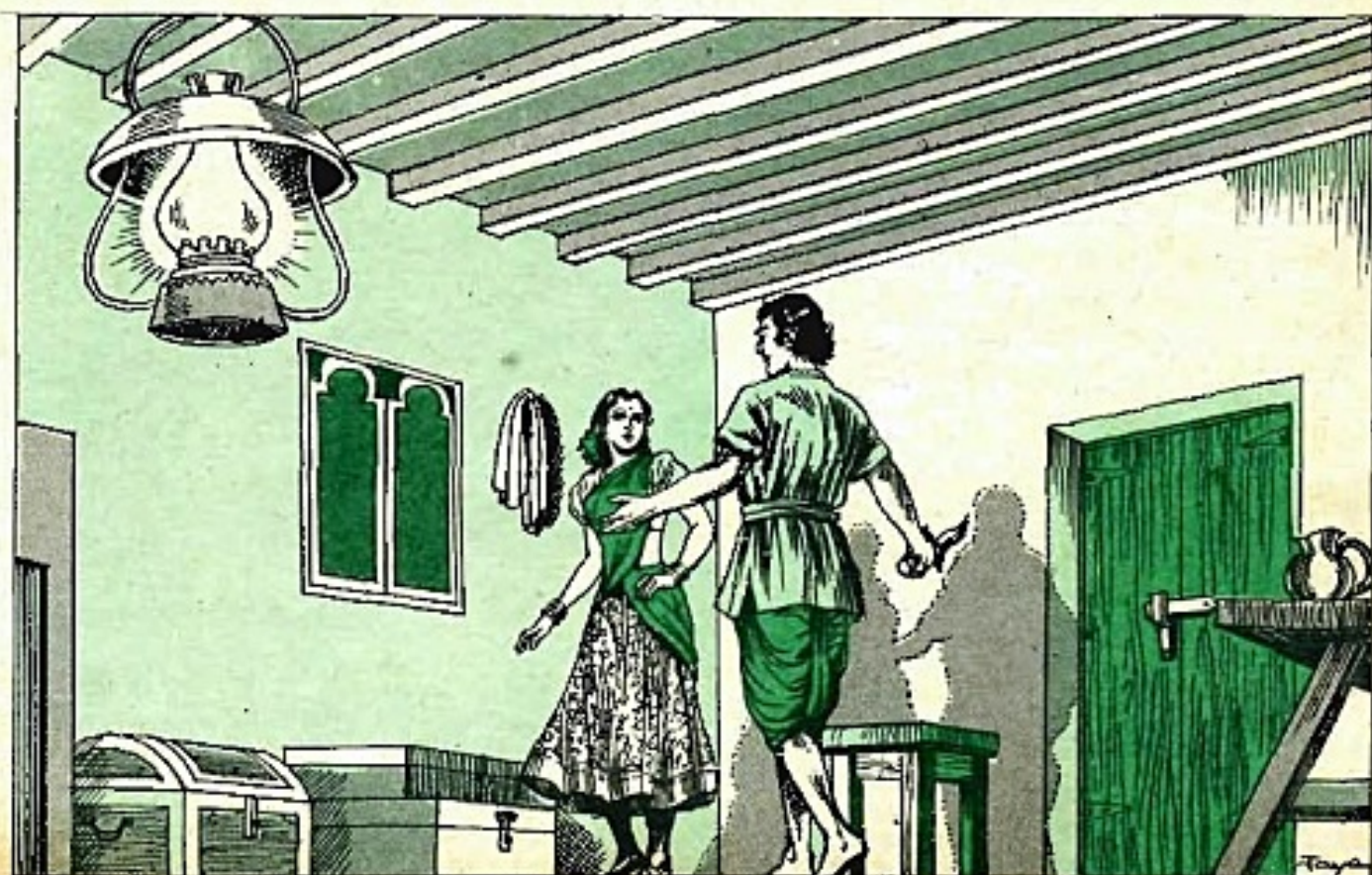
रात के वक़्त अगर कोई दर्वाजा खटखटाता है, तो घर में अकेली रहनेवाली तुम किवाड़ खोल देती हो? यह कोई हिम्मत की बात नहीं है, बेवकूफ़ी है।

"इसी प्रकार भय और सावधानी में भी अंतर है। धन का छिपा रखना, रात के वक़्त किवाड़ बंद करना, अंधेरे में दिया लेकर चलना भय नहीं कहलाता है। वह तो सावधानी कहलाता है। साहस का मतलब खतरे के वक़्त विचलित हुए बिना उसका सामना करना है। ऐसी हालत में कुछ न कर सकने की हालत में आना भय कहलाता है। अब भी सही, तुम इसका अंतर समझ सकोगी तो अच्छा होगा।"

चंपा ने इसके बाद अपनी मूर्खता और असवधानी पर विजय पाई। इसके एक महीने के बाद चंपा की मंगनी हुई। वर की माँ ने चंपा को पसंद करके उसके गले में एक माला पहना दी। उस माला को देख चंपा चौंक उठी। वह माला उसके गले में से चुराई गई थी।

चंपा ने सर उठाकर वर को देखा, वह चौंक पड़ी। क्योंकि वही युवक उसके गले से माला को तोड़नेवाला चोर था।

चंपा जल्दी-जल्दी घर के अंदर चली गई और आवेश में आकर अपने पिता से बोली—"बाबूजी! मेरी माला की चोरी करनेवाला युवक यही वर है। मैं इस शादी को कभी पसंद नहीं कर सकती।"

राजनाथ ने मुस्कुरा कर कहा—"तुम अपनी मूर्खता को खुद प्रकट करती हो। सच्ची बात जाने बिना यूँही दोषारोपण करना साहस नहीं कहलाता। उसने मंदिर में कई बार तुम्हें देखा और तुम्हारे साथ शादी करना चाहा। मगर तुम्हारे अन्दर जो कमी है, उसे सुधारने के लिए उसने यह नाटक रचा है। तुम बदल गई हो, यह बात मालूम होने पर वह अपनी माँ को यह रिश्ता क़ायम करने के लिए अपने साथ लाया है। फिर क्या था, चंपा ने लज्जा के मारे अपना सिर झुका लिया।
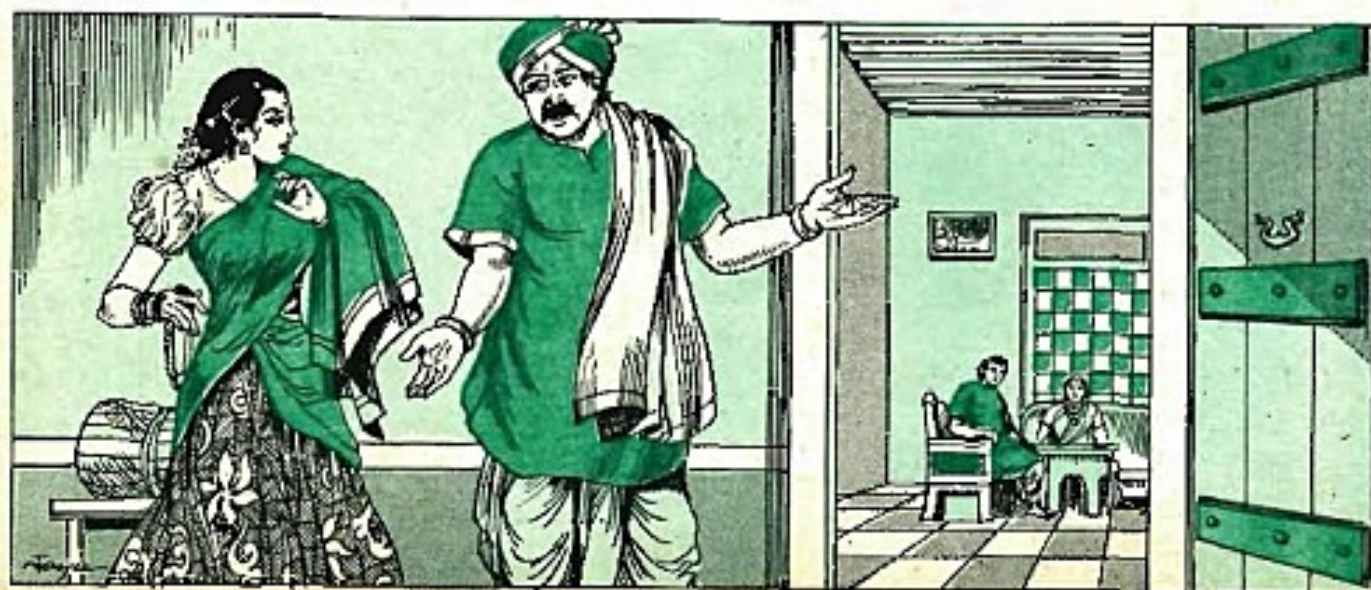
गौतम

ब्रह्मदेव ने एक बार एक अपूर्व सुंदरी अहल्या की सृष्टि की और यह शर्त रखी कि जो व्यक्ति सब से पहले पृथ्वी की परिक्रमा करके लौटेगा, उसे अहल्या को पत्नी के रूप में दे देंगे। अहल्या को अपनी पत्नी बनाने के विचार से कई देवता पृथ्वी की परिक्रमा करने चल पड़े। उस वक़्त गौतम नामक मुनि ने ब्यानेवाली एक गाय की प्रदक्षिणा की और ब्रह्मा के पास लौटकर बोले–"भगवान! मैंने गाय की परिक्रमा की है, कहा जाता है कि गाय की परिक्रमा पृथ्वी की परिक्रमा के बराबर है; इसलिए अहल्या के साथ मेरा विवाह कीजिए।" यों गौतम ने ब्रह्मा को मनवा कर अहल्या के साथ विवाह किया।

गौतम के द्वारा अहल्या के गर्भ से शतानीक नामक पुत्र पैदा हुआ। इन्द्र अहल्या पर मोहित हुए और आधी रात के वक़्त मुर्गे जैसे बांग दी। इस पर गौतम ने सोचा कि सवेरा होने को है और वे काल कृत्य समाप्त करने के वास्ते घर से बाहर निकल पड़े। उस वक़्त इन्द्र गौतम के घर में घुस पड़े, अहल्या के साथ अपना थोड़ा समय बिताया। यह बात मालूम होने पर गौतम ने इन्द्र और अहल्या को भी शाप दे दिया।

ब्रह्मा ने गौतम को यह वर दिया कि गौतम अपने हाथों से बीज बोवे तो उसी वक़्त अंकुरित हो फसल पैदा होगी।

एक बार सभी प्रदेशों में अकाल पड़ा। सभी मुनि खाने की खोज में गौतम के आश्रम में आये। गौतम सब लोगों को खाना देते गये। उनकी संपत्ति देख कुछ मुनि ईर्ष्या से भर उठे, उन लोगों ने एक मायावी गाय की सृष्टि करके उसे गौतम के खेत में खदेड़ दिया। लौटकर गौतम

को बताया—"महामुनि! आप के खेत को गाय चर रही है।" गौतम ने गाय को हांकते अपने हाथ का जल उस पर छिड़क दिया। दो बूंदों के उस पर गिरते ही मायावी गाय मर गई।

मुनि इसे देख झल्ला उठे, बोले—"छी: छी:, गोहत्या करनेवाले पापी के घर भोजन नहीं करना है, चले, चलो।"

यों कहते वे लोग जाने को तैयार हो गये। इस पर गौतम ने उनसे प्रार्थना करते हुए पूछा—"मुनियो, गोहत्या के पाप से कैसे मुक्ति मिल सकती है?"

मुनियों ने बताया—"गाय का शव जिस स्थान पर गिरा है, उस पर अगर गंगा प्रवहित हो तो आप का पाप जाता रहेगा।"

गौतम ने गंगा को अपने खेत से बहाने के लिए शिवजी के प्रति तपस्या की। शिवजी ने प्रत्यक्ष होकर अपनी एक जटा गौतम के हाथ देकर उसे निछोड़ने को कहा।

गौतम ने शिवजी की जटा ले जाकर गाय के कलेवर पर निछोड़ दिया। गाय जिंदा हो उठी। उस जगह से एक नदी बह चली, उसका नाम गौतमी पड़ा और गो को जिंदा करने के कारण गोदावरी नाम से भी वह प्रसिद्ध हो गई। मुनियों को गौतम ने पाखण्ड बन जाने का शाप दे दिया।

एक बार गौतम ब्रह्मदत्त नामक राजा के घर गये। उस राजा ने कई साल तक गौतम को खाना खिलाया। एक दिन गौतम के भोजन में मांस मिल गया था। इस पर गौतम ने कुपित हो राजा को गीध बन जाने का शाप दिया। राजा ने गौतम से क्षमा माँगी। तब गौतम ने समझाया—"तुम्हें श्रीरामचन्द्रजी जब छुयेंगे, तब तुम्हारा यह रूप जाता रहेगा।"

गौतम ने न्याय सूत्रों की रचना की। व्यास मुनि ने उनकी निंदा की। इस पर गौतम ने प्रतिज्ञा की कि वे व्यास को अपनी आँखों से नहीं देखेंगे। कहा जाता है कि अपने तलुए में आँख की सृष्टि करके उसके द्वारा व्यास को देखा था।

घर का भेदिया

सुमेरु पर्वत पर वज्रनाभ नामक एक दानव ने ब्रह्मा के प्रति घोर तपस्या की और उन्हें प्रसन्न करके यह वर प्राप्त किया कि देवताओं के द्वारा उसकी मृत्यु न होगी।

वज्रनाभ जैसे देवताओं के लिए अजेय था, वैसे उसका वज्रपुर नामक दुर्ग भी अभेद्य था। उसकी अनुमति के बिना उस दुर्ग में हवा तक घुस नहीं पाती थी।

वरदान पाकर घमण्डी हो वज्रनाभ ने एक एक करके कई राजाओं को जीत लिया, उनके राज्य तहस-नहस किये और सारे लोकों की जनता को सताने लगा।

पृथ्वी लोक को जीतने के बाद भी बज्रनाभ संतुष्ट नहीं हुआ। देवताओं को भी हराने के ख्याल से स्वर्ग पर हमला कर बैठा।

उसने इंद्र के पास संदेशा भेजा कि या तो उसके साथ युद्ध करें या हार स्वीकार करें। इंद्र की समझ में न आया कि क्या किया जाय!

देवताओं ने चर्चा करके यह निर्णय किया कि युद्ध में वे लोग वज्रनाभ को हरा नहीं सकते, इसलिए गुप्त रूप से उसके दुर्ग में प्रवेश करके उसे ध्वंस करे, मगर वज्रपुरी दुर्ग अभेद्य था।
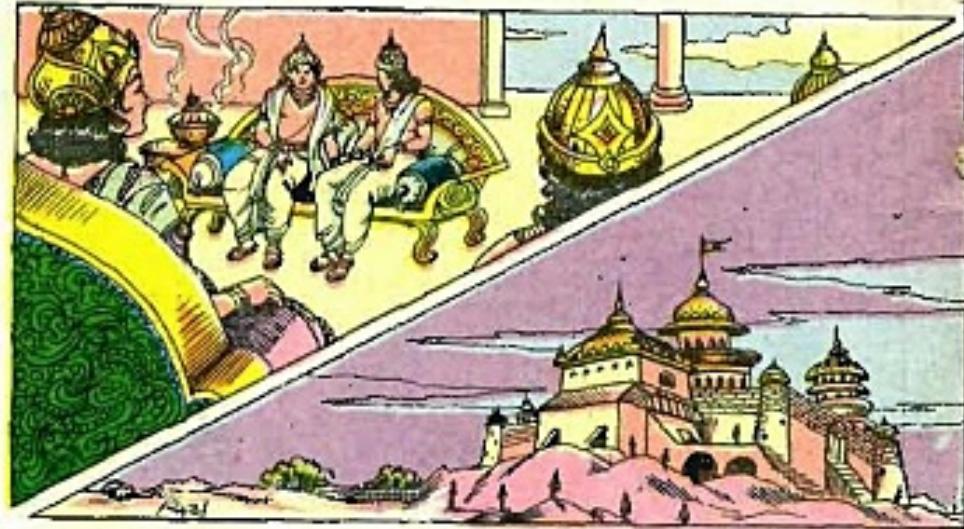
साथ ही वज्रनाभ को देवता मार नहीं सकते थे, लेकिन मनुष्य मार सकते थे। इस कारण इंद्र ने यह उपाय सोचा कि द्वारका के निवासी श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न को इस काम में नियुक्त किया जा सकता है।

वज्रनाभ की पुत्री प्रभावती बड़ी रूपवती थी। वज्रनाभ उसे अपने प्राणों से अधिक प्यार करता था। वह एक अच्छी नर्तकी भी थी।

एक दिन प्रभावती सरोवर के पास बैठी थी, तब इंद्र के द्वारा भेजे गये कुछ राजहंस आकर वहाँ उतर पड़े। उन हंसों ने प्रभावती को अपनी ओर आकृष्ट किया।

वे हंस आपस में चर्चा कर रहे थे— "ओह! यह प्रभावती कैसी रूपवती है! द्वारका के निवासी प्रद्युम्न ही इस कन्या के योग्य वर हो सकते हैं।" ये बातें प्रभावती ने सुन लीं।

इस बीच वज्रनाभ ने अपनी पुत्री को नाट्य शास्त्र का प्रशिक्षण दिलाने के ख्याल से लोक प्रसिद्ध भद्र नामक नाट्याचार्य को बुलवा भेजा। मगर भद्र को वज्रपुरी में जाते देख देवताओं ने उसका अपहरण किया।
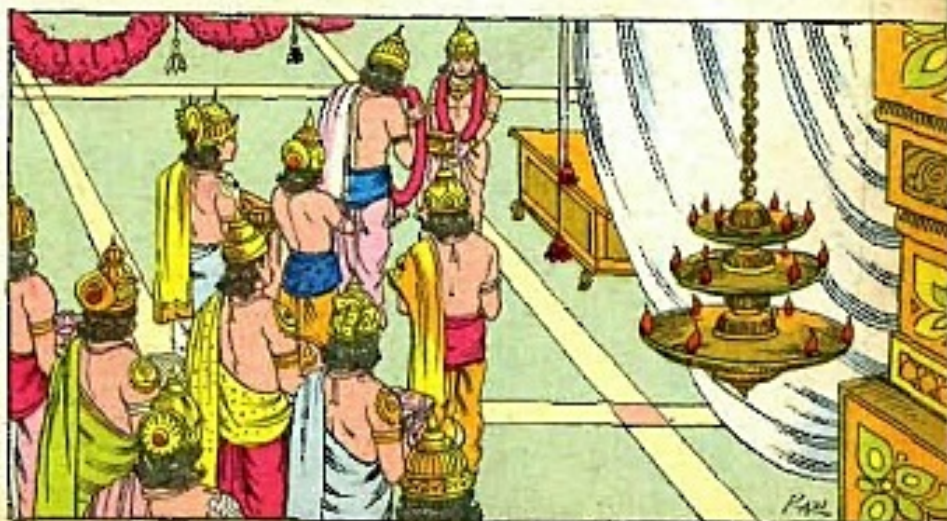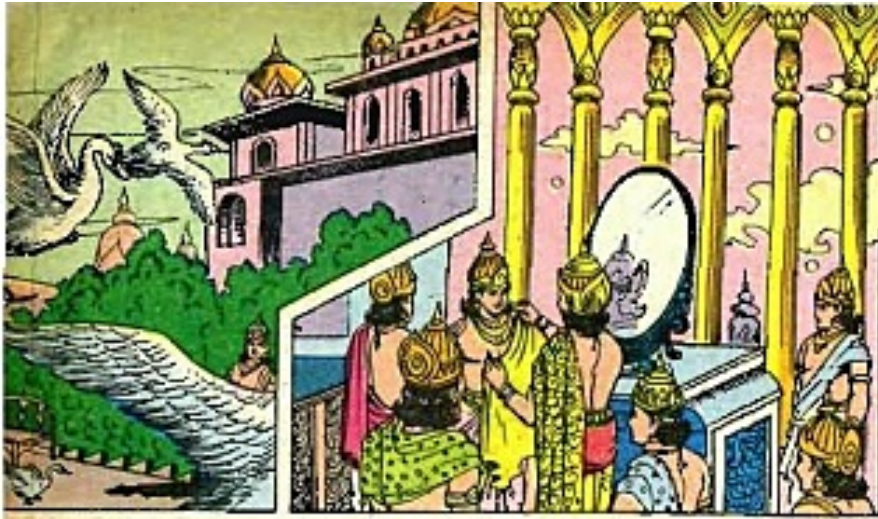
देवताओं ने भद्र की धारण की हुई पुरानी पोशाकों और आभूषणों को हटाकर उसे अच्छे क़ीमती दिव्य आभूषण दिये और उसकी पोशाकों तथा आभूषणों को प्रद्युम्न को पहना दिया और तब उसे प्रभावती के पास भेजा ।

भद्र के वेष में प्रद्युम्न वज्रपुरी पहुँचे और प्रभावती को अपना परिचय दिया । प्रभावती प्रद्युम्न को देख परम प्रसन्न हुई ।

इसके बाद प्रभावती और प्रद्युम्न ने गुप्त रूप से विवाह किया । हमेशा दूसरे राज्यों पर हमला करनेवाले वज्रनाभ को यह समाचार मालूम नहीं हुआ । कालक्रम में प्रभावती ने एक पुत्र का जन्म दिया ।

प्रभावती के पुत्र पैदा होने के बाद वज्रनाभ को असली बात मालूम हो गई और वह प्रद्युम्न के साथ युद्ध के लिए तैयार हो गया । मगर कृष्ण के द्वारा भेजे गये वज्रायुध से प्रद्युम्न ने वज्रनाभ को मार डाला ।

आस्तीक

पुराणों के बालकों में आस्तीक कई प्रकार से विचित्र बालक है। उसका पिता जरत्कार नामक एक ब्राह्मण है। जरत्कार ने सारा जीवन ब्रह्मचर्याश्रम में बिताने का निश्चय किया और तपस्या में अपना सारा समय बिताने लगा।

एक दिन जरत्कार ने एक विचित्र प्रकार के तप करनेवालों को देखा। वे लोग एक पेड़ से लगकर औंधे सिर लटक रहे थे।

जरत्कार ने उन लोगों से पूछा–"महाशय! आप लोग कौन हैं? आप की यह तपस्या बड़ी विचित्र है। इसका तरीक़ा कृपया मुझे भी बता दीजिए।"

इस पर उन लोगों ने उत्तर दिया–"हम लोग जरत्कार नामक व्यक्ति के दादा और पर दादा हैं। उसके संतान न होने की वजह से हमें नरक की प्राप्ति होनेवाली है। बस, यही बात है। हम कोई तप तो नहीं कर रहे हैं।"

ये बातें सुन जरत्कार दुखी हुआ। उसने शादी करने और बच्चे पैदा करने का निश्चय किया। इसके बाद अपने नाम की कन्या के प्राप्त होने पर विवाह करने के विचार से ऐसी कन्या की खोज करने लगा। अपने नाम की कन्या के साथ विवाह करने का निश्चय करने के पीछे शायद यह रहस्य भी छिपा होगा कि ऐसी कन्या के न मिलने पर विवाह न करे।

मगर उसी नाम की एक कन्या थी। उसका नाम जरत्कारु था। वह नागराजा वासुकी की बहन थी। जब वासुकी को पता चला कि जरत्कार अपने नाम की कन्या की खोज कर रहा है, तब उसने अपनी बहन के साथ उसका विवाह करने को उसने मान लिया। वासुकी ने सोचा

कि ऐसा करने पर नागवंश और आर्यों के बीच का वैर जाता रहेगा, पर उसकी आशा निराशा न हुई।

जरत्कार ने जरत्कारु के साथ विवाह करके एक पुत्र पैदा किया। वही आस्तीक है। जब से जरत्कार ने एक पुत्र का जन्म देकर अपने पितरों का ऋण चुकाने का निर्णय किया, तब से जरत्कार के मन में फिर से ब्रह्मचर्य और तपस्या करने की इच्छा पैदा हुई। कोई न कोई बहाना करके अपनी पत्नी और गृहस्थी को त्यागने का संकल्प करनेवाले जरत्कार को एक अच्छा मौक़ा मिल गया। एक दिन शाम को जब सूर्यास्त हो रहा था, तब सोनेवाले जरत्कार को उसकी पत्नी ने जगाया। जरत्कार यह सोचकर नाराज़ हो गये कि उसकी पत्नी ने उसका अपमान किया है और वह अपने घर व गृहस्थी को छोड़ कहीं चला गया।

आस्तीक ने च्यवन के पुत्र प्रमति के पास वेदशास्त्रों का अध्ययन किया और छोटी-सी उम्र में ही वह बहुत बड़ा विद्वान कहलाया।

उन्हीं दिनों में तक्षक के डंसने पर परीक्षित मर गये और इसके प्रतिकार के रूप में परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने सर्पयाग करके सभी नागों को अग्नि की आहुति करना प्रारंभ किया।

इस पर आस्तीक की माता जरत्कारु ने अपने पुत्र से कहा—"बेटा, तुम जनमेजय की यज्ञशाला में जाकर किसी भी उपाय से नागवंश की रक्षा करो।"

आस्तीक ने यज्ञ भूमि में जाकर अपने पांडित्य के प्रभाव से जनमेजय को प्रसन्न किया। यज्ञ के समय जनमेजय ब्राह्मणों को उनके मुँह माँगी चीजें दे रहे थे। आस्तीक को इतनी छोटी अवस्था में बड़े ज्ञानी बने देख जनमेजय प्रसन्न हुए और उससे कुछ माँगने को कहा।

तब आस्तीक ने सर्पयाग बंद करने की प्रार्थना की, फिर क्या था, सर्पयाग रुक गया।

अनोखी शादी

लगभग चार सौ साल पहले की बात है।

कलिंग राज्य के एक प्रदेश पर पुरुषोत्तम नामक एक राजा शासन करते थे। वे गंगावंशी राजा थे, अविवाहित थे। उन्होंने अपने मन में यह निश्चय कर लिया था कि योग्य कन्या प्राप्त होने पर ही विवाह करेंगे, वरना नहीं।

उन दिनों में कांचीपुरम के राजा के एक कन्या थी। वह भुवन सुंदरी के रूप में प्रसिद्ध थी। सब जगह यह प्रवाद चल पड़ा कि वह कन्या सब तरह से राजा पुरुषोत्तम के योग्य है। यह समाचार कांचीपुरम के राजा के कानों में भी पड़ा।

यह समाचार जब पुरुषोत्तम के पिता को मालूम हुआ, तब कांचीपुरम के राजा के पास अपने पुरोहित के द्वारा खबर भेजी। कन्या को देखने का उचित प्रबंध भी हुआ। कांचीपुरम के राजा ने सब प्रकार से उनका आदर-सत्कार किया और पुरुषोत्तम के बारे में ज़रूरी जानकारी भी हासिल की।

पुरुषोत्तम एक प्रसिद्ध वंश के युवक थे, साथ ही शिक्षित भी थे। शक्ति और सामर्थ्य में भी वे किसी भी राजकुमार से कम न थे। सब से बढ़कर उनका ओहदा भी काफ़ी ऊँचा था। साथ ही उस समावेश में पुरुषोत्तम और कांचीपुरम की राजकुमारी ने परस्पर देख एक दूसरे को पसंद भी कर लिया।

इस तरह सब प्रकार से अनुकूल उस रिश्ते को क़ायम करके कांची राजा इसकी खबर मैसूर राज्य के राजा के पास स्वयं भेजना चाहते थे। पुरुषोत्तम भी उस रिश्ते को निश्चय मानकर अपने राज्य को लौट गये।

२५ साल पहले की चन्दामामा की कहानी

पुरुषोत्तम के लौट जाने पर कांचीपुरम के राजा के मन में एक विचित्र प्रकार की शंका पैदा हुई, वह यह थी—गंगवंशी राजा बड़े ही भक्त हैं। वे कई पीढ़ियों से जगन्नाथ स्वामी की आराधना किया करते हैं। पुण्य तीर्थ जगन्नाथपुरी में उन्हीं लोगों ने एक विशाल मंदिर स्वामी के वास्ते बनवाया था। गंगवंशी राजाओं के द्वारा स्वयं स्वामी की सेवा आदि कार्यक्रम चलाना एक पुरानी परिपाटी-सी हो गई थी।
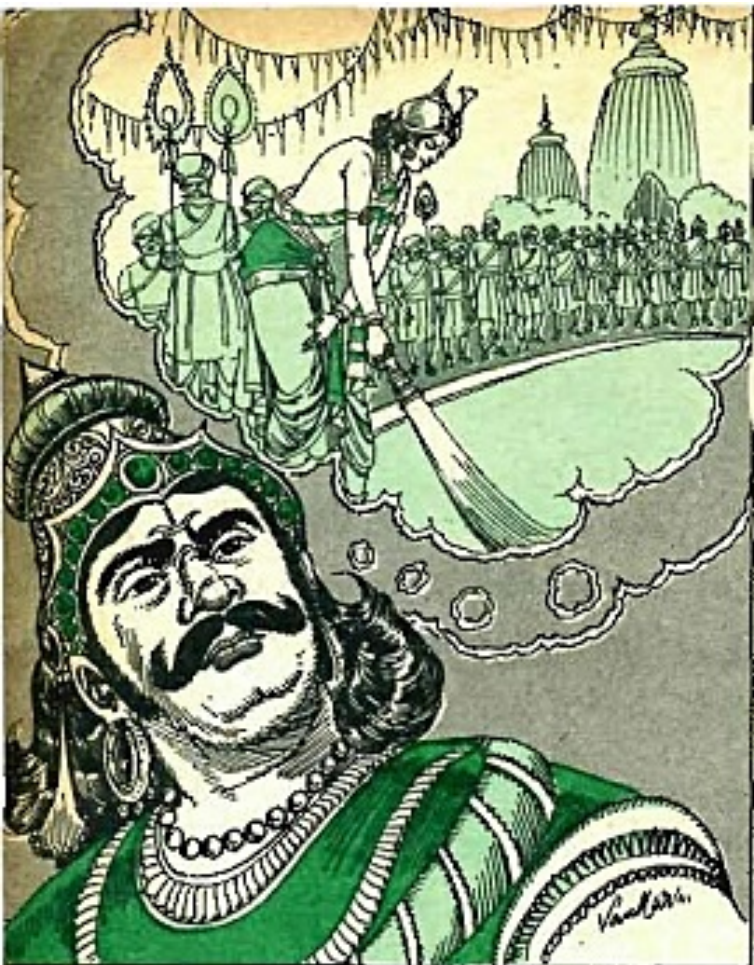
यों परंपरा से चले आनेवाले आचार के अनुसार साल में एक बार शिष्टाचार के रूप में राजा पुरुषोत्तम जगन्नाथ स्वामी के मंदिर में जाते और उत्सव के समय स्वामी की सेवा करने की सूचना के रूप में सोने की पट्टीवाले झाड़ू से वहाँ की जमीन साफ़ करना एक आम रिवाज-सा बन गया था।

यह समाचार मालूम होने पर कांचीपुर के राजा ने अपना विचार बदल डाला। उन्होंने सोचा—"झाड़ू देनेवाले के साथ क्या मैं अपनी कन्या का विवाह करूँ? यह कभी नहीं हो सकता।" यों निश्चय करके कांचीपुरम के राजा ने उसी वक़्त अपना यह निर्णय पुरुषोत्तम के पिता के पास कहला भेजा।

कांचीपुरम के राजा के द्वारा यह संवाद मिलते ही पुरुषोत्तम का पौरुष जाग उठा। अपने आराध्य देव का इस प्रकार अपमान करना उनके लिए असह्य प्रतीत हुआ। इस पर उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि इसके बदले में कांचीपुरम के राजा को उचित सबक़ सिखाया जाएगा।

पुरुषोत्तम के द्वारा यह शपथ लेने के थोड़े ही दिन बाद अचानक गंगवंशी राजा की सेनाओं ने कांचीपुर के राज्य को घेर लिया। मगर कांचीपुर के राजा साधारण व्यक्ति न थे। उन्होंने बड़ी आसानी से गंगवंशी राजा की सेनाओं को भगा दिया। फिर भी राजा पुरुषोत्तम निराश नहीं

हुए । इस बार वे दुगुनी सेना इकट्ठी करके पूर्वाधिक उत्साह के साथ दृढ़ प्रतिज्ञा करके युद्ध करने निकले । समर्थ होने पर भी इस बार कांचीपुर के राजा उस भयंकर युद्ध में टिक न पाये ।

कांची राजा के पराजित होते ही पुरुषोत्तम ने अपने शत्रु कांची के राजा और राजकुमारी को भी बन्दी बनाने का आदेश दिया ।

अपने वश में आ गई कांचीपुर की राजकुमारी के साथ विवाह करने में राजा पुरुषोत्तम को कोई रोकनेवाला न था, इसलिए सबने यही सोचा कि राजा पुरुषोत्तम ऐसा ही करेंगे । पर वास्तव में पुरुषोत्तम कांचीपुरम की राजकुमारी के साथ विवाह करना नहीं चाहते थे, तिस पर भी उन्होंने राजकुमारी की ओर आँख तक उठाकर न देखा । साथ ही उन्होंने उसी समय अपने मंत्री को बुलाकर आदेश दिया–"मंत्री महोदय, आप किसी झाड़ू देनेवाले के साथ इसका रिश्ता क़ायम करके इसकी शादी कीजिए ।"

मंत्री के सामने यह समस्या पैदा हो गई कि क्रोधवश राजा ने जो आदेश दिया है, उसका पालन किया जाय या नहीं । मगर मंत्री बड़ा मेधावी था । उसने सोचा कि इस मामले में जल्दबाज़ी में आकर राजा

के आदेश को अमल करना ठीक नहीं है, ठण्डे दिल से सोच-समझकर काम लेना है । राजा से भी इसके लिए अनुमति प्राप्त की । तब उसी क्षण मंत्री महोदय ने सबकी आँख बचाकर राजकुमारी के लिए एक गुप्त प्रदेश में ठहरने का प्रबंध किया, वहाँ पर उसके लिए समस्त प्रकार के राजपरिवारोचित प्रबंध किया । यह बात अत्यंत गुप्त रखी गई थी । इसके बाद पुरुषोत्तम कांचीपुर की राजकुमारी की बात बिलकुल भूल गये । उधर कांची के राजा का क्रोध भी धीरे धीरे जाता रहा । अपनी करनी और जल्दबाज़ी पर वे भी खुद पछताने भी लगे थे ।

इस घटना के थोड़े महीने बाद फिर जगन्नाथ स्वामी के उत्सव आ पड़े। प्रति वर्ष की भांति पुरुषोत्तम स्वामी की सेवा में निमग्न हो गये। पुजारी ने अपने मंदिर के पुराने रिवाज़ के अनुसार सोने की मूठवाला एक झाड़ू लाकर राजा के हाथ सौंप दिया। राजा पुरुषोत्तम भी अत्यंत भक्ति भाव से स्वामीजी के चरणों के पास की जमीन पर झाड़ू दे रहे थे।

उस वक़्त मंत्री अत्यंत विनयपूर्वक आकर राजा के सामने खड़ा हो गया। उसके साथ समस्त प्रकार के अलंकारों से शोभित एक अपूर्व सुंदरी अपने हाथों में एक पुष्प माला लेकर खड़ी हो गई।

"महाराज! क्षमा कीजिएगा। आपके आदेश का पालन करने का मौक़ा अब मुझे मिल गया है। इस राजकुमारी ने यह प्रतिज्ञा की है कि यह भगवान की चरणधूलि को झाड़कर उनकी सेवा भक्तिपूर्वक करनेवाले को ही अपने पति बनायेगी।" मैंने सभी राज्यों में ढूंढ़ा, पर कहीं ऐसे योग्य व्यक्ति मुझे नहीं मिले। इसलिए मैं इस कन्या को फिर आप ही को सौंप रहा हूँ।" यों समझाकर बुद्धिमान मंत्री पीछे हट गया।

उस समय कांची राजकुमारी ने भक्ति भाव से वह पुष्पमाला राजा पुरुषोत्तम के कंठ में पहना दी। अचानक मंदिर के ऊपर से पुष्पों की वर्षा हुई। पुरुषोत्तम को अत्यंत आश्चर्य हुआ। उन्हें अप्रत्याचित रूप में पिछली सारी बातें याद हो आईं।

पुरुषोत्तोम ने सोचा कि यह सब भगवान की ही महिमा है, उन्होंने उस विवाह के लिए अपनी सम्मति दी।

उसी समय कांची नरेश भी मुक्त होकर आ पहुँचे। फिर क्या था, राजा पुरुषोत्तम और कांची राजकुमारी का अत्यंत वैभवपूर्वक विवाह हुआ।

इस घटना पर राज्य की सारी प्रजा अमित आनंदित हुई। मंत्री की बुद्धि-कुशलता की सबने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। कांची नरेश ने भी अपने मन में सोचा—"मैं धन्यभाग हूँ।"

तिल कैसे खावे ?

सोमगुप्त ने तिल सुखाकर एक लूले को पहरे पर इसलिए बिठाया कि वह तिल न खा सकेगा। फिर भी आधा घंटे बाद लौटकर वह तिल देखने आया। उसे शक हुआ कि कहीं लूले ने तिल खा डाले हो, पूछा–"क्यों बे, ऐसा लगता है कि तिल कम हो गये हैं, क्या तुमने खा लिये ?"

"मैं तो लूला हूँ मालिक! कैसे खा सकता हूँ ?" पहरेदार ने अपने कटे लूले हाथ दिखाये।

"अबे, यह बात तो मैं भी जानता हूँ। लूले हाथ को गीला करके उसमें तिल चिपकाकर नहीं खा सकते ?" सोमगुप्त ने कहा।

लूले ने अपनी माँ, पत्नी और बच्चों की क़सम खाकर कहा कि उसने ऐसा काम नहीं किया है। सोमगुप्त संतुष्ट होकर चला गया।

अब लूले को मालूम हो गया कि तिल कैसे खाने हैं। उस तरीके को अपनाकर लूले ने तिल खाना शुरू किया।
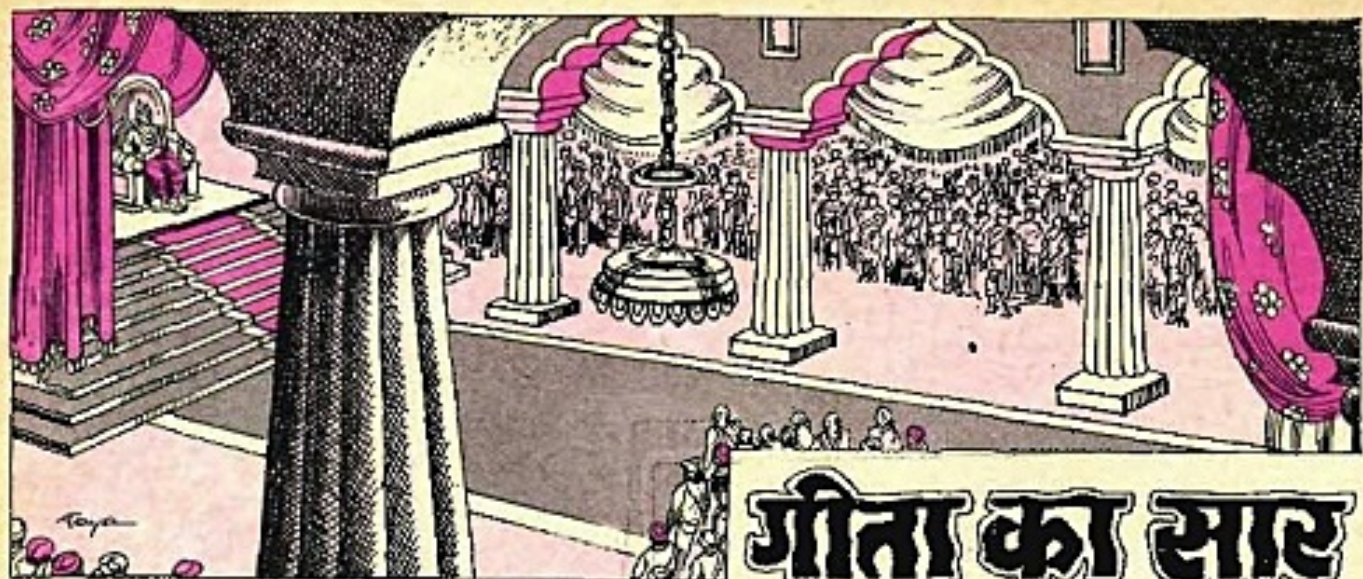
गीता का सार

महाराजा विवेकवर्द्धन अपनी प्रजा को सदा प्रसन्न देखना चाहते थे, इसके लिए क्या किया जाय? यों सोचकर उन्होंने ज्ञानियों की सलाह माँगी, सब ने यही बताया कि सुख-भोग मानव को सच्चा संतोष नहीं दे सकते, संतुष्टि के द्वारा ही यह संभव है।

राजा ने उनसे फिर पूछा—"संतुष्टि कैसे प्राप्त होगी?"

ज्ञानियों ने बताया—"जनता को दर्शन शास्त्र का ज्ञान कराना है। दर्शन और वेदांत का सार भगवद्गीता है। उस ग्रंथ को जनता के समझने लायक़ कर दे तो उन्हें तृप्ति के साथ संतोष भी प्राप्त होगा।"

इस पर विवेकवर्द्धन ने पंडितों को नियुक्त कर स्वयं गीता के तत्व सुने और अंत में माना कि ज्ञानियों की बातों में सचाई है। मगर सारी जनता को गीता का सार तत्व समझाने के लिए कई योग्य पंडितों की जरूरत होगी। इसलिए राजा ने इस बात की घोषणा कराई—भगवदगीता को साधारण प्रजा की समझ में आने लायक़ रीति में समझा सकनेवाले पंडितों का राजा सम्मान करेंगे।

ढिंढोरा सुनकर कई पंडित राजदरबार में आये। उनकी जांच करने के लिए राजा ने दरबारी पंडित को नियुक्त किया। दरबारी पंडित ने उन सबकी गोष्ठी बुलाकर चर्चा की, तब राजा के पास लौटकर बोले—"महाप्रभू! वे सब उद्दण्ड पंडित हैं। गीता में उनकी परीक्षा लेने की शक्ति मैं नहीं रखता।"

राजा की समझ में न आया कि आखिर क्या करें? उसी वक़्त राजधानी में चिरंजीवी आ पहुँचे। जब उन्हें मालूम हुआ कि देश के सारे महा पंडित राजदरबार

में आये हुए हैं, तब उनके साथ गोष्ठी करने के ख्याल से चिरंजीवी सबसे पहले दरबारी पंडित से मिले ।

दरबारी पंडित ने इसके पूर्व ही चिरंजीवी का नाम सुन रखा था, इसलिए उनको राजा के पास ले गये और बोले– "महाराज ! ये सब प्रकार के उलझनों से भरे प्रश्नों को हल करनेवाले समर्थ व्यक्ति हैं । हमारे भाग्यवश ये राजधानी में आये हुए हैं । मैं समझता हूँ कि ये हमारी समस्या को हल कर सकते हैं ।"

इस पर राजा ने चिरंजीवी के सामने अपनी समस्या रखी । चिरंजीवी ने विनयपूर्वक बताया–"वैसे मैं कोई बड़ा व्यक्ति नहीं हूँ, फिर भी मैं प्रयत्न करूँगा ।"

दूसरे दिन राज दरबार में जब सभी पंडितों का समावेश हुआ, तब चिरंजीवी ने सबकी ओर दृष्टि दौड़ाकर कहा– "महाराजा आप सब के पांडित्य के अंतर जानना चाहते हैं । इसके वास्ते एक प्रतियोगिता रखना क्या आप सब के लिए स्वीकार्य होगा ?"

सब ने स्वीकृतिसूचक सर हिलाये ।

चिरंजीवी ने एक-एक पंडित के पास जाकर पूछा–"कहा जाता है, गीता का भाष्य बताने के लिए एक जीवन का काल काफी नहीं है, ऐसी हालत में उस महा
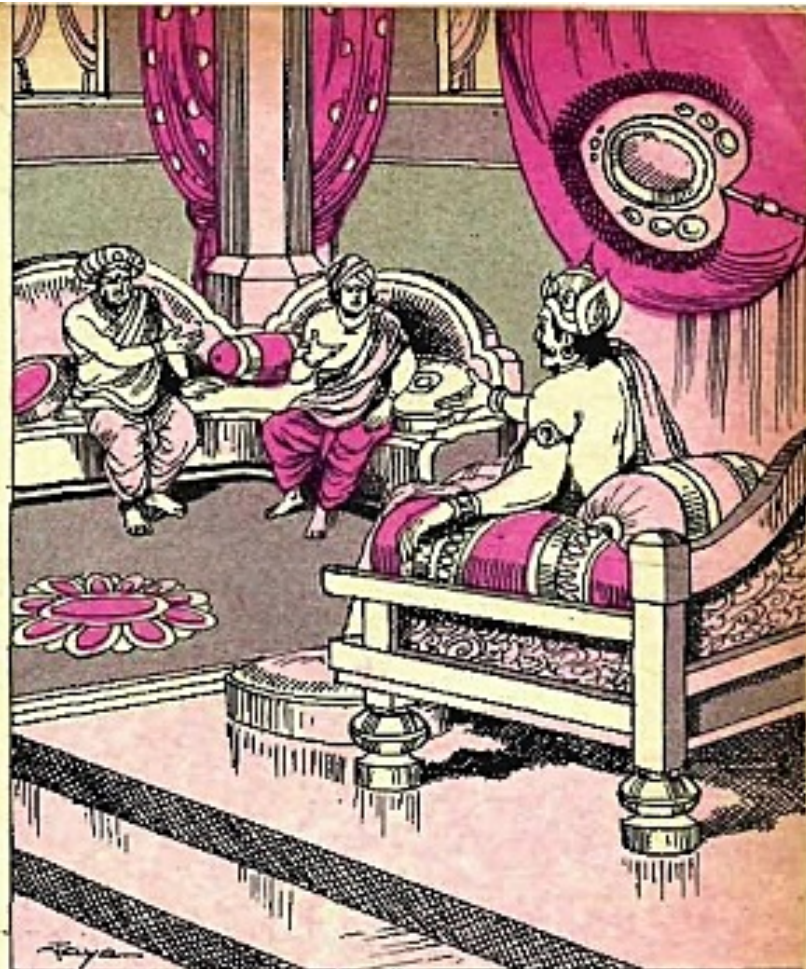
ग्रंथ को आप लोग इतने अल्प काल में कैसे समझ पाये ?"

"आप का कहना सच है, मगर मैंने बड़ी लगन के साथ परिश्रम करके गीता के सार को समझ लिया है !" यों प्रत्येक पंडित ने अपने परिश्रम की प्रशंसा की ।

सब पंडितों से बात करने के बाद चिरंजीवी राजा के पास लौट आये और बोले–"महाराज, ये सब महान पंडित जरूर हैं, मगर इनमें से एक ने भी गीता के सार को हृदयंगम नहीं किया है ।"

सभी पंडितों के चेहरे सफ़ेद पड़ गये । राजा ने भी कहा–"इन पंडितों से आप गीता के बारे में कोई प्रश्न किये बिना

यों अपना निर्णय सुनाना उचित मालूम नहीं होता ।"

"महाराज! मैंने भी गीता का अध्ययन किया है । पर गीता के द्वारा मैंने केवल यही समझ लिया है कि प्रत्येक मानव को "मैं" नामक भावना को त्यागना चाहिए! प्रत्येक काम "मैं" करता हूँ, यह कहना नहीं चाहिए, इस बात को समझने की कोशिश करनी चाहिए कि हर काम भगवान हम से करा रहे हैं, हम केवल निमित्त मात्र हैं । "मैं" नामक शब्द अज्ञान और अहंकार को सूचित करता है । गीता के सार को समझने की बात कहनेवाले ये सारे पंडित यही सोचते हैं कि इन लोगों ने अपनी निजी शक्ति के बल पर यह कार्य साध लिया है ।" चिरंजीवी ने समझाया ।

इस पर सभी पंडितों ने मान लिया कि चिरंजीवी का कहना सत्य है । उनके भीतर विद्या का घमण्ड और अहंकार की भावना अधिक है और चिरंजीवी के कथन से उनमें ज्ञानोदय हो गया है ।

इसके बाद राजा ने सभी पंडितों का उचित रूप में सम्मान किया, उन्हें भेजने के बाद चिरंजीवी से बोले–"हे महाज्ञानी! मैं अपनी सारी प्रजा को संतुष्ट और सुखी रखने के लिए गीता का सार तत्व समझाना चाहता हूँ । आप कृपया इसके लिए कोई और उपाय हो तो बताइये ।"

चिरंजीवी ने राजा से यों निवेदन किया–"महाराज! 'संतोष' नामक शब्द का कोई अर्थ नहीं है । आप ऐसा प्रयत्न कीजिए, जिससे इस देश में कोई आलसी न हो । सभी प्रौढ़ लोग कठिन परिश्रम करें, तो यह देश सदा के लिए सुख-समृद्धि से भरा रहेगा । जो व्यक्ति स्वयं मेहनत करके उसका अनुभव करता है, उसे संतोष होता है । दर्शन और वेदांत के उपदेश मानवों को सुस्त बना देते हैं । जिनके भीतर जिज्ञासा है, वे स्वयं उस संबंधी ज्ञान प्राप्त करते हैं । वह तो उनकी निजी बात होती है । इसके वास्ते आप को प्रयत्न करने की कोई जरूरत नहीं है ।"
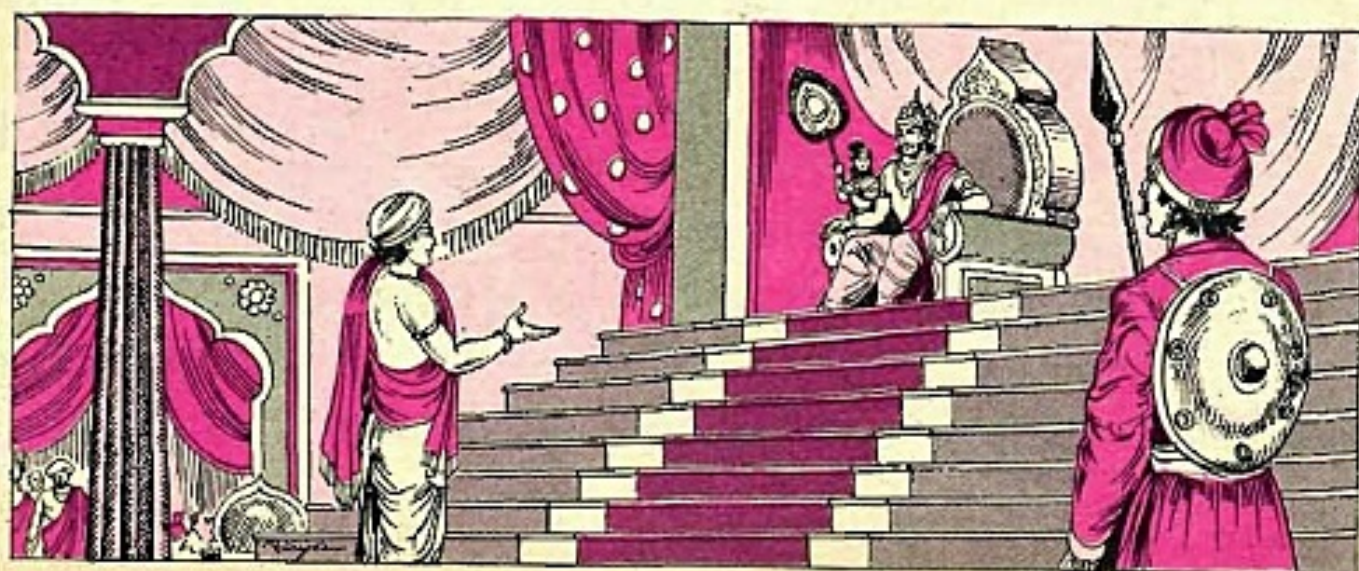
चोर चोर ही होता है!

एक दिन रात को आत्माराम के घर में एक चोर घुस आया, किवाड़ में कुंडी चढ़ाकर आत्माराम के पैरों पर गिरकर बोला—"हे महानुभाव! सिपाही मेरा पीछा कर रहे हैं, अगर मैं उनके हाथ में पड़ गया तो मेरी मौत निश्चित है। आप उनसे यह बताकर कि मैं यहाँ नहीं हूँ, मेरे प्राण बचायेंगे तो मैं आप का उपकार कभी भूल नहीं सकता।"

आत्माराम ने सिपाहियों से यह बताकर कि उस घर में तो कोई आया नहीं है, चोर की रक्षा की। सिपाहियों के जाते ही चोर ने आत्माराम को छुरी दिखाकर पूछा कि घर में जो कुछ धन और गहने हैं, उसके हाथ सौंप दे।

"अरे, तुमने तो अभी कहा कि मेरे उपकार को कभी भूल नहीं सकते?" आत्माराम ने अचरज में आकर पूछा। "मैंने तो ऐसा कभी नहीं कहा।" चोर ने कहा।

"अबे, तुम चोर भले ही हो, पर ऐसे सफ़ेद झूठ बोलते हो?" आत्माराम ने फिर पूछा। "ओह, आप तो बड़े ही सत्य बोलनेवाले हरिश्चन्द्र निकले! आप ने अभी अभी सिपाहियों से झूठ नहीं कहा?" चोर ने उल्टा सवाल किया।

सच्चा खज़ाना

एक गाँव में शिवनाथ नामक एक किसान था। उसने बड़ी मेहनत करके आराम से अपनी ज़िंदगी बिताई और अपने मातृहीन दो बेटों को भी लाड़-प्यार से पाल-पोसकर बड़ा किया। बड़े होने के बाद भी दोनों बेटे पिता की मदद करने से दूर, बल्कि बराबर अपने पालतू खर्च के लिए पिता से रुपयों का तक़ाज़ा करने लगे।

शिवराम ने उन्हें सबक़ पढ़ाना चाहा। एक दिन उन्हें बुलाकर समझाया—"बेटे पालतू खर्च करने के लिए धन मैं कमा नहीं सकता। तुम्हारे दादा ने एक जगह खजाना गाड़कर रखा है। तुम दोनों उसे ले आओ। मुझे तो उस धन की कभी ज़रूरत नहीं पड़ी। मैं अपने ख़र्च के लिए बराबर कमाता रहा, इसलिए उस धन को लाने मैं कभी गया नहीं।"

"बापू! वह ख़जाना कहाँ पर है?" दोनों बेटों ने बड़ी जिज्ञासा से पूछा।

"यहाँ से उत्तरी दिशा में दो सौ मील जाओगे तो धर्मपुरी नामक एक गाँव पड़ेगा। उस गाँव की दक्षिणी दिशा में रत्नगिरि नामक एक पहाड़ है। उस पहाड़ के पश्चिम में एक गुफा है। गुफा के अन्दर जाओगे तो तुम्हारे दादा का नाम खुदा हुआ एक पत्थर दिखाई देगा। उस पत्थर को हटाओगे तो तुम्हें खजाना मिलेगा। उसे लाकर तुम लोग आराम से जिओ। अगर तुम वह ख़जाना चाहते हो तो तुम्हें दो साल तक मेहनत करनी होगी।" शिवनाथ ने समझाया।

फिर क्या था, शिवनाथ के दोनों बेटे जो कुछ धन हाथ लगा, लेकर खाने की सामग्री के साथ उत्तरी दिशा की ओर चल पड़े। वे दो ही गाँव पार कर चुके

रघुनाथ उपाध्याय

थे, कि उनके खाने की सामग्री के साथ धन भी खर्च हो गया। वे सोच ही रहे थे कि अब क्या किया जाय, उनके सामने से एक किसान आ गुजरा। उसने कहा– "क्या तुम लोग मजदूरी करना चाहते हो? मैं अपने खेत में रोपाई करा रहा हूँ, वहाँ जाकर काम करो और मजदूरी के पैसें ले लो।"

शिवनाथ के बेटों को लगा कि उनकी समस्या हल करने के लिए यह किसान देवता बनकर उनके सामने आ गया है। चार दिन तक दोनों ने उत्साहपूर्वक काम किया और पैसे कमाये। अब उनकी समझ में आ गया कि बाक़ी यात्रा कैसे करनी है?

दोनों ने उन पैसों के ख़तम होने तक यात्रा की और फिर काम की खोज करने लगे। घोड़ों के एक सौदागर ने अपने घोड़ों की देखभाल का काम उन्हें सौंपा। उन घोड़ों के बिकने तक उन्हें काम पर लगाकर उनके काम से ख़ुश हो ज़रूरत से ज़्यादा रुपये दिये।

उदयगिरि नामक गाँव पहुँचते-पहुँचते उनके रुपये खतम हो गये। तब उस गाँव के एक व्यापारी ने उन्हें अपने काम पर लगाया। दोनों ने वहाँ पर व्यापार करने का तरीक़ा तो जान लिया, साथ ही उन्हें यह उपाय भी सूझा कि उनकी आमदनी से कोई व्यापार करके खूब धन कमाया जा सकता है। व्यापारी से उन्हें

जो रुपये मिलते थे, बड़ी खिफ़ायत करके धन बचाया और उस पूंजी से दोनों भाइयों ने एक दूकान खोली।

उनका व्यापार खूब चमका। कालक्रम में वे बड़े धनी बन गये और शादियाँ भी कर लीं। इसके बाद वे खजाने की खोज में निकलना चाहते थे, इसलिए घर की जिम्मेदारी अपनी पत्नियों को सौंपकर काफ़ी रक़म के साथ वे चल पड़े।

आखिर धर्मपुरी पहुँचे, तब उन्हें पता चला कि वहाँ रत्नगिरि नामक कोई पहाड़ ही न था, तब उन्हें लगा कि उनके पिता ने उन्हें दगा दिया है, उन्हें अपने पिता पर बड़ा क्रोध आया।

थोड़े दिन बाद वे अपने गाँव लौट आये, अपने पिता की निंदा करते बोले–"आप हमारा पिंड छुड़ाने के लिए खजाने की बात झूठ-मूठ बताकर घर से भगा देना चाहते थे?"

शिवनाथ ने मुस्कुराकर कहा–"मैं तो झूठ कभी नहीं बोला। तुम्हारा व्यवहार देखने से मुझे ऐसा मालूम होता है कि तुम्हें ख़जाना मिल गया है।"

"यह संपत्ति तो हमने मेहनत करके कमाई है।" इन शब्दों के साथ बेटों ने अपना सारा अनुभव पिता को सुनाया।

"तो फिर क्या बात है? सच्चा ख़जाना तो तुम्हारे भीतर ही है। तुम लोग अपने लिए आवश्यक धन के लिए दूसरों पर निर्भर न हुए बिना स्वावलंबन पर निर्भर रहना सीख गये हो। साथ ही तुम लोगों ने यह भी सीख लिया है कि जितनी निष्ठा के साथ काम करोगे, उतना अधिक धन कमा सकते हो। अल्प संतोष को त्याग धन कुबेर बनने की लगन भी अपने भीतर पैदा की है। कोई भी व्यक्ति इन गुणों के बिना ख़जाना बना नहीं सकता, बेटे।" यों शिवनाथ ने समझाया।

बेटों ने समझ लिया कि उनके पिता ने उन्हें घटनेवाले खजाने के बदले कभी न घटनेवाला खजाना दिखा दिया है, तब उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

देवी भागवत
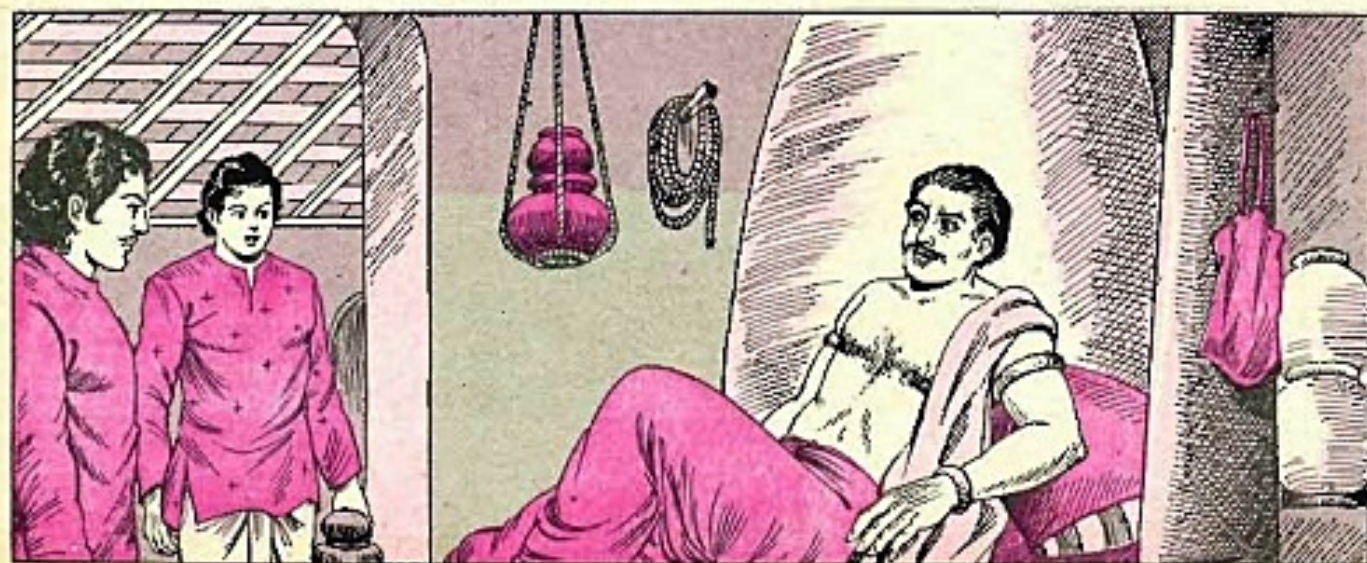
कोसल देश की राजधानी अयोध्या नगर पर ध्रुवसंधि नामक राजा शासन करते थे। उनके मनोरमा और लीलावती नामक दो पत्नियाँ थीं। मनोरमा के सुदर्शन और लीलावती के शत्रुजित नामक पुत्र पैदा हुए। दोनों राजकुमारों में सुदर्शन एक महीना बड़ा था। पर शत्रुजित बड़ा ही सुंदर और बुद्धिमान था। राजा, मंत्री, सेवक और जनता भी शत्रुजित को हृदय से चाहती थी।

एक बार राजा ध्रुवसंधि शिकार खेलने गये। उस वक़्त एक झाड़ी में से अचानक एक सिंह ने राजा पर आक्रमण किया। दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ, लेकिन आखिर उस लड़ाई में दोनों मर गये। राजा के साथ शिकार खेलने गये हुए सेवकों ने राजमहल को लौटकर सारा वृत्तांत मंत्रियों को बताया। मंत्रियों ने राजा की अंत्येष्ठि क्रियाएँ संपन्न कराईं और सुदर्शन के राज्याभिषेक की सारी तैयारियाँ करने लगे। सब ने इस प्रबंध को मान लिया।

उस समय कलिंग के राजा वीरसेन जो रानी मनोरमा के पिता थे, अपने दामाद की मृत्यु का समाचार पाकर अपने दौहित्र सुदर्शन के कुशल-क्षेम जानने के लिए आ पहुँचे। इसी प्रकार उज्जैन से शत्रुजित के मातामह युधाजित भी आ गये। दोनों ने अपने अपने दौहित्रों के हित की कामना से मंत्रियों से बात की।

८. ध्रुवसंधि की कहानी

इस पर युधाजित ने मंत्रियों को चेतावनी देते हुए समझाया—"आप सब लोग एक मत से सुदर्शन को राजा बना दे तो क्या मेरा दौहित्र शत्रुजित चुपचाप देखता रह जाएगा? वह अक़्लमंद है, शक्तिशाली भी। उसकी मदद के लिए बलवान मैं भी हूं। आप सब का अंत करके वह राज्य छीन लेगा। अगर मैंने हाथ में तलवार ली तो सारी पृथ्वी थर्रा उठेगी। आप लोगों की ताक़त मेरे सामने किस खेत की मूली है? इसलिए आप सब फिर एक बार सोच लीजिए।"

उस संदर्भ में युधाजित ने वीरसेन को समझाया—"सुनियेजी, आप का दौहित्र सुदर्शन मेरे दौहित्र शत्रुजित से एकाध महीना उम्र में भले ही बड़ा क्यों न हो, मगर मेरा दौहित्र सुदर्शन से सभी बातों में योग्य है। उम्र में ज्येष्ट होनेवाले की अपेक्षा गुण में बड़े बने व्यक्ति ही ज्यादा योग्य होता है। इसलिए मेरा दौहित्र शत्रुजित राजा बनने योग्य है न?"

इसके उत्तर में वीरसेन ने बताया—"यह तर्क बेमतलब का है। मेरी पुत्री मनोरमा पट्ट महिषी है। उसका पुत्र सुदर्शन ही राजा हो सकता है। ज्येष्ट राजा न बने, यह कहाँ का धर्म है?"

इसके बाद राजकुमारों के दोनों मातामहों के बीच विवाद बढ़ता गया। इसे देख सब लोग उन दोनों से नफ़रत भी करने लगे। इस बीच राजा ध्रुवसंधि की मौत की खबर पाकर राज्य को लूटने के ख्याल से शृंगबेरपुर से जंगली जाति के लोग आ पहुँचे। वे लोग एक ओर से राजधानी नगर को दूर से ही घेरे हुए थे। पर इधर राजा वीरसेन और युधाजित अपनी सेनाओं को इकट्ठा कर लड़ने लगे। दोनों सेनाओं के बीच भयंकर लड़ाई हुई। उस लड़ाई में युधाजित ने वीरसेन को मार डाला।

रानी मनोरमा अपने पिता की मृत्यु की खबर पाकर बड़ी दुखी हुई। पहले

ही वह अपने पति की मृत्यु से दुखी थी। साथ ही उसका पुत्र उम्र में अत्यंत छोटा था। अब उसका सहारा कौन है? रानी सोचने लगी, अपने पिता वीरसेन को मारनेवाला युधाजित क्या अपने पुत्र सुदर्शन का अंत किये बिना छोड़ देगा? उसका आशय अपने दौहित्र शत्रुजित को राजा बनाने का है न? साथ ही लीलावती के साथ भी उसका सौतेला वैर बना रहेगा। वह जरूर उसे कारागार में बन्दी बनाकर छोड़ देगी। मंत्रियों ने पहले सुदर्शन का राज्याभिषेक करना चाहा, मगर अब उन्हें युधाजित की बात मानना पड़ेगा। किसी भी रूप में उसकी मदद करनेवाला कोई नहीं रहा।

यों विचार कर रानी मनोरमा ने विदल्ल नामक मंत्री को गुप्त रूप से बुला भेजा, उसे अपनी हालत सुनाकर सलाह माँगी।

विदल्ल ने समझाया—"महारानीजी! यहाँ पर आप और आप के पुत्र की कोई सुरक्षा नहीं है। काशी के राजा सुबाहु मेरे मामा हैं। वे महान शक्तिशाली हैं। अगर हम वहाँ जायेंगे तो जरूर हमारी रक्षा करेंगे।"

मनोरमा ने मान लिया, अपने पिता के लिए श्राद्ध कर्म आदि संपन्न कराया, तब

अपने पुत्र तथा सैरंध्री नामक अपनी एक दासी को साथ ले विदल्ल के पीछे काशी के लिए चल पड़ी। लेकिन उस दिन रात को रानी के परिवार को डाकुओं ने लूटा और उन्हें खाली हाथ भेज दिया। दूसरे दिन रानी नाव पर गंगा नदी को पार कर भरद्वाज के आश्रम में पहुँची।

भरद्वाज ने रानी को देख पूछा—"तुम कौन हो? कहाँ से आती हो? तुम्हारे पति का क्या नाम है? तुम दुखी मालूम होती हो, इसका कारण क्या है?"

ये प्रश्न सुनकर रानी बिलख-बिलखकर रो पड़ी, इस पर मंत्री विदल्ल ने मुनि को सारा वृत्तांत सुनाया। मुनि ने कहा—
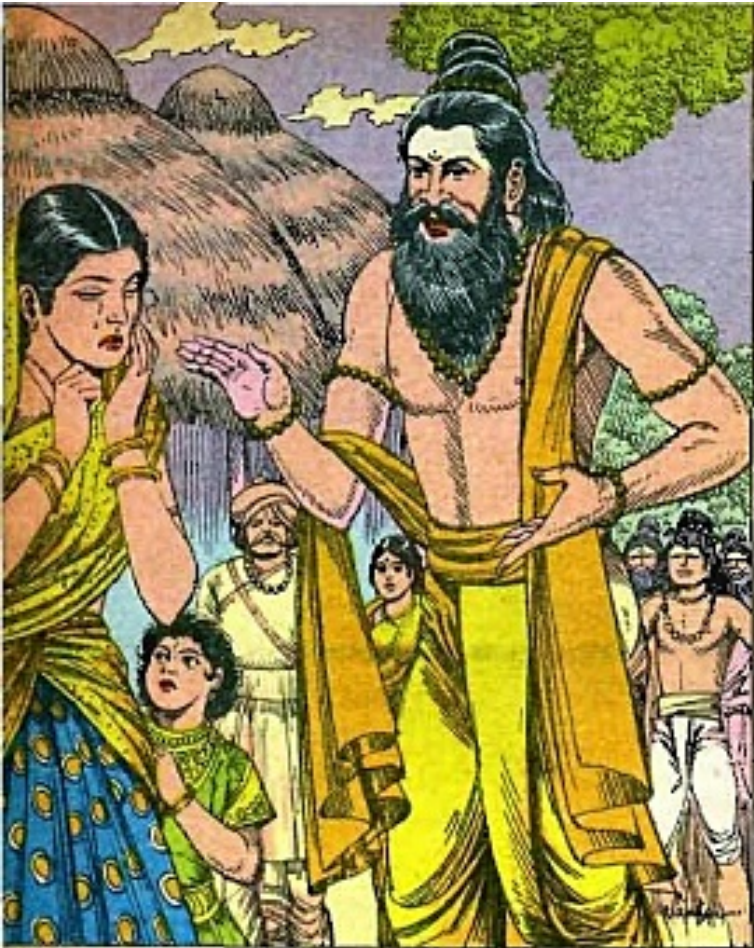
"बेटी, तुम्हें डरने की कोई बात नहीं है। तुम्हारा पुत्र जरूर राजा बनेगा। तुम लोग मेरे आश्रम में रह जाओ।" इसके बाद मुनि के द्वारा दिखाई गई एक पर्णशाला में मनोरमा, विदल्ल, सैरंध्री और सुदर्शन आराम से अपने दिन बिताने लगे।

उधर अयोध्या में शत्रुजित ने अत्यंत वैभव के साथ अपना राज्याभिषेक कराया। पर जनता को बिलकुल पता न चला कि मनोरमा और सुदर्शन कहाँ चले गये हैं। थोड़े दिन बाद शत्रुजित के मातामह युधाजित को पता चला कि सुदर्शन और मनोरमा मुनि भरद्वाज के आश्रम में हैं। उसने निश्चय किया कि दुश्मन को जीवित रखना खतरे से खाली नहीं है, इसलिए उसको मार डालने की योजना बनाई।

यह समाचार मिलते ही मनोरमा ने भरद्वाज मुनि के पास जाकर खतरे की सूचना दी। भरद्वाज ने अपने आश्रम के बाहर युधाजित से मिलकर पूछा—"आप के यहाँ पर आने का कारण क्या है?"

युधाजित ने साफ़ बताया—"मैं मनोरमा के वास्ते आया हुआ हूँ।"

भरद्वाज ने सवाल किया—"अपने पति और पिता को खोकर अपने पुत्र के साथ यहाँ पर आश्रय पानेवाली मनोरमा क्या इस आश्रम को छोड़कर कहीं जा सकती है?"

"आप चुपचाप मनोरमा और उसके पुत्र को मेरे साथ भिजवा दीजिए, वरना जबर्दस्ती अपने साथ ले जाऊँगा।" युधाजित ने धमकी दी।

इस पर नाराज़ हो भरद्वाज ने कहा—"अरे पापी! नीच! क्या तुम मेरे आश्रय में आये हुए लोगों को जबर्दस्ती ले जाओगे? कोशिश करके देखो तो सही। तुम राजाओं की दृष्टि में हम ऋषि-मुनियों का कोई मूल्य ही नहीं है?"

मुनि की बातें सुन युधाजित डर गया और उसने एकांत में अपने मंत्री से पूछा—"तुमने मुनि की बातें सुन ली है न? अब मनोरमा और उसके पुत्र सुदर्शन को ले

जाने का उपाय क्या है? राजनीति तो यही बताती है कि दुश्मन को बचाये रखना ठीक नहीं है। सुदर्शन को मार डालने पर ही मेरे दौहित्र शत्रुजित के शासन को कोई खतरा न होगा। यहाँ पर मेरा सामना करने की ताक़त रखनेवाला कौन है? क्या मुनि की धमकी की बातें सुन हमें डरना होगा?"

इस पर मंत्री ने बताया--"महाराज! मुनियों के साथ वैर मोल लेना उचित नहीं है। वे तो बड़े ही शक्तिशाली होते हैं। प्राचीन काल में विश्वामित्र वसिष्ठ से वैर मोलकर इसी प्रकार अपमानित हुए हैं। इसके बाद वे राज्य को त्यागकर तपोशक्ति पाने के लिए ऋषि बन गये थे। अलावा इसके सुदर्शन इस वक़्त अनाथ है, तिस पर बालक है! वह हमारा क्या बिगाड़ सकता है? अगर उसने ऐसा कोई प्रयत्न किया तो तब देखा जाएगा! मगर इस मुनि के साथ दुश्मनी मोलकर खतरे में फंस जाना उचित नहीं है।"

मंत्री की सलाह को मानकर युधाजित ने नम्रतापूर्वक मुनि भरद्वाज के दर्शन किये, अपनी करनी के लिए क्षमा माँगी, तब वापस चला गया। इसके बाद मनोरमा भरद्वाज के आश्रम में निश्चिंत रह गईं। सुदर्शन ग्यारह साल का हो गया। उसने मुनि के पास वेदों का अध्ययन किया, अन्य शास्त्रों के साथ धनुर्वेद भी पढ़ा।

एक दिन रात को महादेवी ने सुदर्शन को सपने में दर्शन देकर उसे सारी अस्त्र-विद्याएँ प्रदान कीं। उन्हीं दिनों में काशी राजा की पुत्री शशिकला के अद्भुत सौंदर्य का समाचार सुदर्शन ने सुना और उसके साथ विवाह करना चाहा। शशिकला ने भी भरद्वाज के आश्रम में रहनेवाले सुदर्शन के बारे में सुना और उसके साथ विवाह करने का निश्चय कर लिया।

उधर भरद्वाज के आश्रम में सुदर्शन दिन भर शशिकला के बारे में सोचता और रात को उसी के सपने देखा करता

था। एक दिन श्रृंगिबेरपुर का राजा निषाद सुदर्शन के पास आ पहुँचा और मैत्रीभाव से उसने चार घोड़े जुते रथ को झंडा तथा अन्य समस्त आयुधों के साथ सुदर्शन को भेंट कर दिया।

उस वक़्त भरद्वाज के आश्रम के मुनियों ने सुदर्शन को बताया-"बेटा, तुम जल्द ही राजा बनने जा रहे हो! तुम पर महादेवी का अनुग्रह है, वह कभी व्यर्थ नहीं जाता!" फिर उन लोगों ने मनोरमा से कहा-"रानी, वीरमाता! तुम्हारा पुत्र राजा होनेवाला है!"

"आप लोगों की वाणी सच निकले! लेकिन मेरे पुत्र की मदद करनेवाला एक भी व्यक्ति नहीं है, ऐसी हालत में वह राजा कैसे बनेगा? यही मेरा संदेह है! मगर आप लोगों के आशीर्वाद ही मेरे पुत्र के लिए सबसे बड़ी सहायता है!" यों कहकर मनोरमा बड़ी खुश हो गई।

सुदर्शन अपने रथ पर सवार हो जहाँ भी जाता तो उसे ऐसा लगता कि उसके रथ के चारों तरफ़ एक अक्षौहिणी सेना है।

काशी में शशिकला सुदर्शन के बारे में सोचते अन्न-जल त्यागकर दुर्बल होती गई। उसकी व्यथा को जानकर उसके पिता ने शशिकला के स्वयंवर का निर्णय किया और सभी राजाओं के पास संदेशा भेजा।

वैसे स्वयंवर तीन तरह के होते हैं, पहला पण स्वयंवर, दूसरा शुल्क स्वयंवर और तीसरा इच्छा स्वयंवर है। रामचन्द्रजी ने शिवजी के धनुष को तोड़ सीताजी को पत्नी के रूप में प्राप्त किया, वह पण स्वयंवर है! पर सुबाहू ने अपनी पुत्री के लिए इच्छा स्वयंवर का निर्णय किया। उधर स्वयंवर का समाचार पाकर सभी देशों के राजकुमार काशी आ पहुँचे।

शशिकला जब-तब पता लगा रही थी कि स्वयंवर में कौन-कौन राजकुमार आये हुए हैं, वह आँसू गिराते अपनी सखियों से बोली-"अरी, सुनो, बेकार ये सब लोग क्यों आ रहे हैं? मैं सुदर्शन को छोड़

और किसी राजकुमार को कैसे वर सकती हूँ? धन और राज्य किस काम के? विवाह करना है तो शक्ति और बुद्धि रखनेवाले के साथ ही करना है! ऐसा व्यक्ति केवल सुदर्शन अकेले ही है।"

सखी ने जाकर ये बातें रानी को बताईं—"महारानीजी! राजकुमारी शशिकला ने सुदर्शन नामक युवक को हृदय से वर लिया है। सुनते हैं कि वे मुनि भरद्वाज के आश्रम में रहते हैं।"

रानी ने यह समाचार अपने पति को सुनाया। राजा ने कहा—"मैं सुदर्शन की बात जानता हूँ। वह अपना राज्य खोकर अपनी माता के साथ जंगल में मुनि के आश्रम में रहता है! मैं उसके साथ अपनी कन्या का विवाह कैसे करूँ? बड़े-बड़े संपन्न राजा हज़ारों की संख्या में हैं! तुम उससे कह दो कि वह अपना निश्चय बदल दे।"

रानी ने अपनी बेटी को प्यार से अपनी गोद में लेकर समझाया—"बेटी, तुमने जिस युवक को वर लिया है, वह जंगल में कंद, मूल और फल खाते दुर्बल हो, अपने रिश्तेदारों से दूर हो, अंगबल और अर्थबल खोया हुआ अभागा है। बड़े-बड़े राज्यों के राजकुमार तुम्हारे साथ विवाह करने के ख्याल से आये हुए हैं। इतना क्यों, उस सुदर्शन का छोटा भाई भी आया हुआ है। वह देखने में काफी सुंदर है, बलवान है, तिस पर इस वक़्त वह शासन कर रहा है। उसका नाम शत्रुजित है। वह तुम्हारे लिए सब तरह से अनुकूल पड़ता है। इसी के वास्ते ही तो इसके मातामह ने कलिंग राजा का वध किया है? इतना क्यों, इससे भी भयंकर बात तो यह है कि मौक़ा मिलने पर युधाजित उस सुदर्शन का ज़रूर वध कर डालेगा। इसी डर के साथ सुदर्शन ने भरद्वाज मुनि के आश्रम में आश्रय लिया है। तुम्हारे पिता किसी भी हालत में सुदर्शन के साथ तुम्हारा विवाह करने के लिए तैयार नहीं हैं। इसलिए तुम अपना यह विचार बदल डालो; मेरी बात मानो।"

कन्यालाभ

मोहनसिंह अपने पुत्र रतनसिंह की शादी करना चाहता था, लेकिन बचपन में रतन ने नटखट की ज़िंदगी बिता कर छोटी-मोटी चोरियाँ भी कर डाली थीं, इस वज़ह से जान-पहचान के लोग कोई भी अपनी लड़की उसके साथ ब्याहने को तैयार न थे। आखिर मोहनसिंह खीज कर बोला–"तुम्हारी शादी करना अब मेरे बस की बात नहीं है। मेरी इज्जत भी मिट्टी में मिलती जा रही है। तुम कहीं जाकर अपनी ज़िंदगी सुधार लो और शादी कर लो। तब तक तुम इस घर में क़दम न रखो।" यों डांट कर रतनसिंह को घर से भगा दिया।

रतनसिंह अपने घर और गांव छोड़कर किसी दूसरे गांव में गया। पेट भरने के ख़याल से चोरी करने के इरादे को लेकर वह एक घर में घुस गया। वह घर पूनम नामक एक बेवा औरत का था। उसकी एकाकी लड़की गौरी शादी के योग्य हो गई थी। अपनी लड़की की शादी किसी योग्य युवक के साथ करना चाहती थी। इस वास्ते पूनम ने दूध-दही, अण्डे, उपले आदि बेचकर एक एक गहना बनाती गई और उन्हें एक संदूक़ में छिपाती गई। उन गहनों पर रतन की नज़र पड़ गई। उन्हें हड़प कर गांव के बाहर टीले पर मंदिर के सामने रतन ने एक गड्ढा निकाला और उसमें छिपाकर उसने साधू वेष बना लिया ताकि कोई उसे पहचान न पाये।

दूसरे दिन गौरी फूल बेचने हाट की ओर चल पड़ी: उस गांव में शमशेर नामक एक शराबी रहता था। वह जुआखोर भी था। वह गौरी पर नज़र गड़ाये हुए था। वह कई बार पूनम को धमकी भी दे चुका था कि गौरी की शादी

अनूप शर्मा

उसके साथ कर दे, वरना बुरा होगा। मगर पूनम ने न माना। किसी भी तरह से गौरी को अपनी बनाने के इरादे से वह मौक़े की ताक में था।

शाम के वक़्त गौरी हाट से घर लौट रही थी। तब शमशेर को मौक़ा हाथ लगा। वह कुछ गुंडों की मदद से गौरी को जबर्दस्ती टीले पर स्थित मंदिर के पास ले गया, गौरी के रोते व चिल्लाते रहने पर भी उसके गले में मंगल सूत्र बांधने को हुआ।

साधू के वेष में मण्डप में बैठे रतनसिंह ने उस दृश्य को देखा और उसने गौरी को बचाना चाहा, वह उठ खड़ा हुआ। ज़ोर से चिल्लाते उनके नज़दीक जाकर बोला–"अबे, यह कैसी गड़बड़ है?"

शमशेर ने गुस्से में आकर पूछा–"दाल भात में मूसरचंद जैसे तुम कौन हो बे?"

रतनसिंह उसके चेहरे को परखकर देखते हुए आश्चर्य का अभिनय करते बोला–"वाह, तुम्हारी क़िस्मत कैसी अद्भुत है! तुम मिट्टी को भी छुओगे तो वह सोना बन जाएगी। संपत्ति तुम्हारे पैरों के नीचे आ लोटेगी।"

"तुम्हारा सिर। चलो, यहां से हट जाओ।" शमशेर ने क्रोध से डांट दिया।

"अरे मूर्ख! क्या तुम समझते हो कि मैं मजाक़ कर रहा हूं? तुम अपने पैरों के नीचे की जमीन खोदकर देख तो लो!" रतनसिंह ने दर्प से कहा।

शमशेर ने अपने पैरों के नीचे की ज़मीन खोदकर देखा। फिर क्या था, उसे रतनसिंह के द्वारा गाड़कर रखे गहने दिखाई दिये। उन गहनों को अपनी जेब का हवाला करके शमशेर हाथ जोड़कर बोला–"आप तो सचमुच बड़े महात्मा मालूम होते हैं।" इसके बाद रतन ने गौरी का चेहरा देख नाक-भौं सिकोड़कर कहा–"यह बदक़िस्मत लड़की कौन है?"

"साधू महाराज, आप यह क्या कहते हैं?" शमशेर ने पूछा।

"इस लड़की की जन्मकुंडली में मारक योग है। इसके साथ शादी करनेवाला व्यक्ति तीन दिनों के अंदर मर जाएगा।" रतनसिंह गंभीर होकर बोला।

यह बात सुनते ही गौरी के प्रति शमशेर का मोह जाता रहा। उसके मन में गौरी के प्रति विरक्ति पैदा हो गई। उसने गौरी को अपने घर जाने को कहा। दूसरे दिन सवेरे रतनसिंह गौरी के घर गया। उस वक़्त पूनम घर में न थी। गौरी उसे प्रणाम करके घर के अन्दर ले गई।

"क्या तुम यह बात जानती हो कि परसों रात को तुम्हारे घर चोरी हुई और कल शमशेर को मंदिर के पास जो गहने मिले, वे तुम्हारे ही हैं?" रतनसिंह ने गौरी से पूछा।

"मैं कुछ नहीं जानती!" गौरी ने अचरज में आकर कहा।

रतनसिंह ने अपना साधू का वेष हटाया, अपना परिचय देकर चोरी करने की बात भी उसने सच्ची-सच्ची बता दी।

गौरी बोली—"तुम चोरी करना छोड़ दोगे तो मैं तुम्हारे साथ शादी करूँगी।"

रतनसिंह ने गौरी के सामने क़सम खाई कि वह आइंदा कभी चोरी न करेगा।

अपनी बेटी के जरिये सारी बातें जानकर पूनम ने गाँव के मुखिये से शिकायत की कि शमशेर ने उसके गहने चुराये हैं। मुखिये ने पूनम को गहने वापस दिलाकर शमशेर को जुर्माना लगाया।

इसके बाद रतनसिंह ने गौरी के साथ शादी कर ली, उसको साथ लेकर अपने गाँव पहुँचा। तब दर्वाजा खटखटाकर पूछा—"बापू! दर्वाजा खोलो तो!"

"अबे, जाओ, फिर क्यों लौट आये?" पिता ने खीझकर डांट दिया।

"बापू! तुम्हारे लिए एक अच्छी बहू लाया हूँ।" रतनसिंह बोला।

फिर क्या था, मोहनसिंह दर्वाजा खोलकर अपने बेटे व बहू को घर के अन्दर ले गया।

रूपकुमारी की शादी

माघपूर की राजकुमारी जब युक्त वयस्का हो गई तब उसके असाधारण सौंदर्य की बात सुनकर बड़े-बड़े राजा और कई देशों के राजकुमार उसके साथ शादी करने आगे आये। मगर राजकुमारी रूपकुमारी का पिता अपनी पुत्री का विवाह मणिपूर के राजा श्रीकुमार के साथ करना चाहता था। श्रीकुमार सब प्रकार से योग्य था, साथ ही अपने नाना के बाद उसके राज्य 'माना' के भी वही राजा बननेवाला था।

लेकिन श्रीकुमार में एक कमी थी। वह यह थी कि उसका रंग श्याम वर्ण का था। पहले वह गोरे रंग का था, लेकिन छे साल पहले वह जब शिकार खेलने गया, तब सांप के डसने की वजह से वह बच तो गया, मगर धीरे-धीरे काला रंग धुलकर उसका असली रंग प्रकट होगा। लेकिन फिलहाल वह काले रंग का ही था।

रूपकुमारी काला रंग पसंद नहीं करती थी। मंत्री धीमान ने राजा के विचार के अनुकूल राजकुमारी के मन को बदलने का प्रयत्न करके यह बात जान ली।

राजकुमारी ने साफ़ बता दिया—"इसमें छिपाने की कोई बात नहीं है, मैं काले व्यक्ति के साथ शादी नहीं करूँगी। मेरे भी काले बच्चे पैदा होंगे।"

"बेटी! काले रंग के बच्चे क्या बच्चे नहीं होते? मनुष्य के लिए ख़ास कर अच्छा दिल और स्वभाव चाहिए। रंग तो सिर्फ़ आंखों को दीखनेवाला भ्रम है। परिस्थितियों के कारण वह भ्रम झूठा भी हो सकता है। मैं तुम्हें एक चित्र दिखाता हूँ।" मंत्री धीमान ने समझाया।

मंत्री ने तालियाँ बजाईं, तब एक सेवक एक थाली पर एक वस्त्र ढककर ले आया और उसे मेज़ पर रख दी। दूसरी

श्री ए. सी. सरकार, जादूगर

ओर से राजा और रानी ने उस कमरे में प्रवेश किया।

"अमात्यवर! यह सब क्या है?" रूपकुमारी ने मंत्री से पूछा।

मंत्री धीमान थाली पर से वस्त्र को हटाते हुए बोला–"बेटी! यह तुम्हारी दृष्टि की परीक्षा है। इस थाली पर रखे कांच के गिलास में हमारे जादूगर सोमनाथ के द्वारा भरा गया मंत्र जल है। उनमें से जिस चम्मच की चमक मंद है, वह चम्मच तुम निकालो।"

गिलास के जल में रखे चम्मचों में से एक चकाचौंध करते चमक रहा था और दूसरा साधारण था। रूपकुमारी ने साधारण चम्मच को जल से बाहर निकाला।

"अब तुम चमकनेवाले चम्मच को बाहर निकालो।" मंत्री धीमान ने कहा।

रूपकुमारी दूसरे चम्मच को बाहर निकालकर चकित रह गई। वह धूसरित हो काले रंग में है, धीमान के कहने पर रूपकुमारी ने उसे फिर पानी में रख दिया। दूसरे ही क्षण वह चमकने लगा। चांदी से भी ज्यादा उसकी चमक थी।

धीमान ने राजकुमारी को समझाया–"बेटी! तुमने देख लिया है न? गहरे काले रंग की चीजें भी अद्भुत ढंग से चमक सकती हैं। रंग केवल दृष्टि से संबंधित है। वह उसका खास गुण नहीं होता। इसी प्रकार श्रीकुमार में भी कई चमक-दमक हैं। मैंने उसके बारे में पूरा पता लगाया है। उससे बढ़कर योग्य पति तुम्हें कहीं मिल नहीं सकता।"

इस पर रूपकुमारी श्रीकुमार के साथ शादी करने को मान गई। वैद्य के कहे अनुसार शीघ्र ही उसका काला रंग धुल गया और उसका पहले का गोरा रंग उभर आया।

काले रंग के चम्मच का सफ़ेद दीखने में जादू क्या है? कुछ नहीं; काजल लगा चम्मच पानी के अन्दर अनोखे ढंग से चमकता है।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अगस्त १९७९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

P. Sundaram

★

P. Sundaram

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों ।

★ जून १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा ।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अप्रैल के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : **चश्मे से दुनिया न्यारी लगे !**

द्वितीय फोटो : **आइने में सूरत प्यारी लगे !!**

प्रेषक : भूपति सिंह बिस्ट, डी. बी एस. कालेज, देहरादून (उ.प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी ।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor : NAGI REDDI.
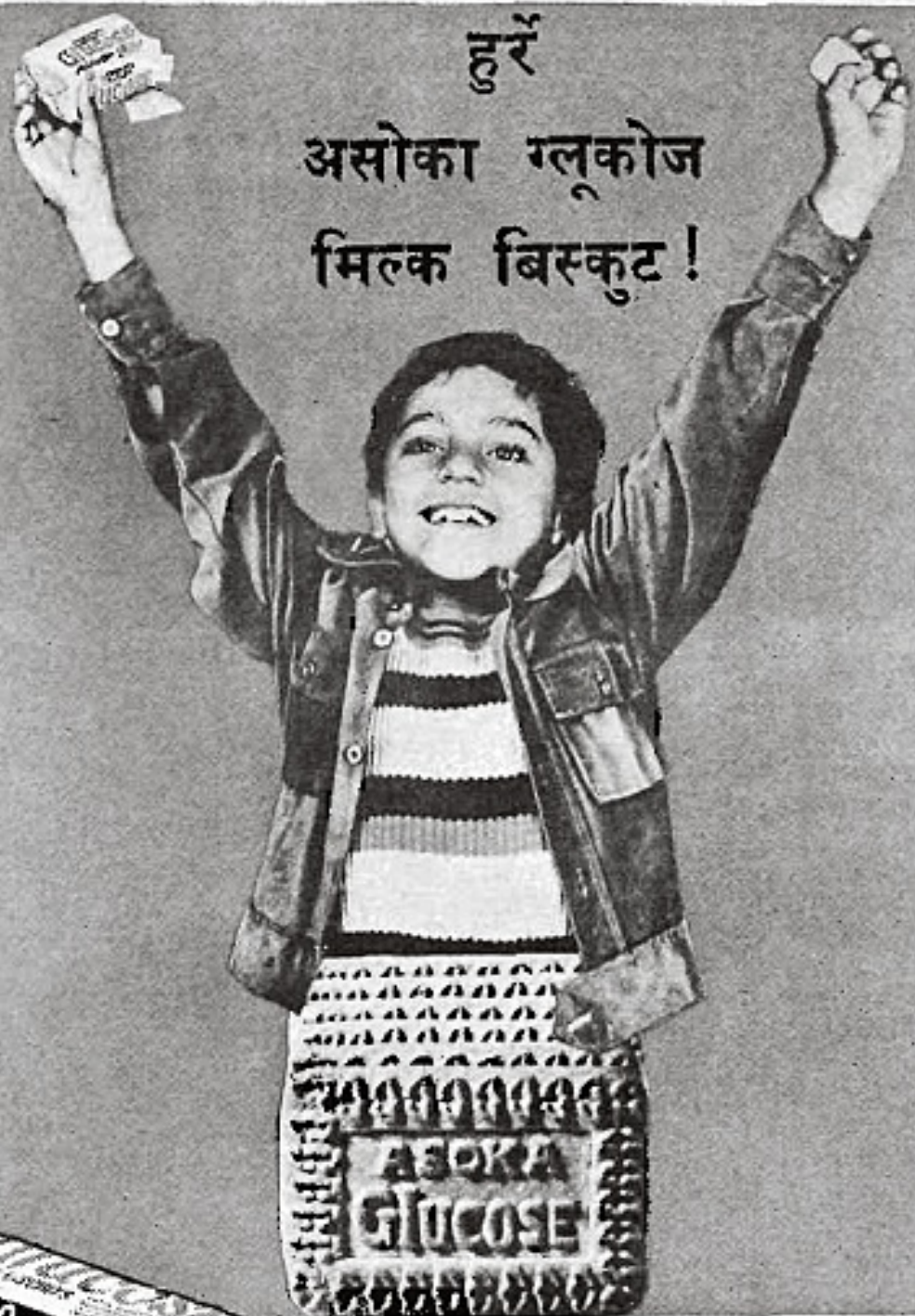
हुर्रे
असोका ग्लूकोज
मिल्क बिस्कुट !
ASOKA
GLUCOSE
Asoka
Glucose
Asoka
एक नयी ताजगी का अनुभव,
जिन्दगी का भरपूर मजा,
कुरकुरे, असोका ग्लूकोज मिल्क बिस्कुटों
का आनन्द लीजिए,
विद्युतीय नियन्त्रण से पूर्ण आधुनिक यन्त्रीय
प्लान्ट में स्वास्थ्यकारी गुणों से निर्मित.
दिलकश और ताजी शक्ति से परिपूर्ण
आज ही अपने परिवार के लिए एक पैकिट खरीदिये !
BREEZE
हर पल
असोका
के साथ
असोका बिस्किट्स हैदराबाद आ. प्र.
असोका क्रेस्पो तथा क्रेस्पोक्रेक के निर्माता

DADDY
MUMMY
AND...
I
" ये सब मैंने अपने एको स्केच पेनसे बनाये हैं।"
EKCO
स्केच पेन
रंग ही रंग... जिनसे बच्चों को प्यार है. वे चाहते हैं—नित नये चित्र बनाना.
अपने बच्चों की सुप्त कला को प्रोत्साहन दीजिए... उन्हें एको स्केच पेन का आकर्षक सेट उपहारस्वरूप दीजिए.
ये कई मनपसंद रंगों में मिलते हैं.
EKCO
SKETCH PEN
वितरक :
किरण एण्ड कंपनी,
७३/९, शामसेट स्ट्रीट, बम्बई ४०० ००२
फोन : ३२४४३२
एको स्केच पेन से लिखने का मज़ा ही कुछ और है.
ADVERTS/WP/216/HIN/58

CHANDAMAMA (Hindi) JUNE 1979 Regd. No. M. 5452

ये हैं बच्चो राम और श्याम

तुम्हारे साथी प्यारे, तुम्हें सिखाने
लाये ये कागज़ के कारनामे न्यारे

तिकोनी टोपी

एक इतना बड़ा कागज़ लो जिसकी लम्बाई उसकी चौड़ाई से डेढ़ गुना हो. जैसे ५१×३४ से.मी. (जैसे किसी अखबार का एक पूरा पन्ना ले सकते हो).

पहले कागज़ को ऊपर से नीचे की ओर वाली दानेदार रेखा पर से मोड़ लो. फिर उसे सीधा कर लो. फिर कागज़ को सभी दानेदार सीधी रेखाओं पर से दिखाये गये तीरों की दिशा में मोड़ो.
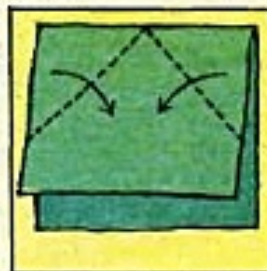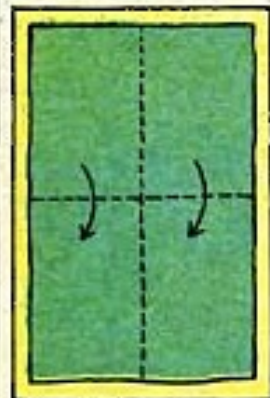
इसके बाद दोनों कोनों को बीच की ओर मोड़ो.

अब नीचे के दोनों पल्लों को ऊपर की ओर मोड़ो. एक को अगली तरफ़ और दूसरे को पिछली तरफ़. बस टोपी तैयार है. पहनो और मुस्कुराओ!

PARLE POPPINS
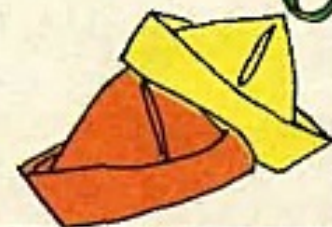
पारले
पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
रसीली... प्यारी... मज़ेदार

५ फलों के स्वाद –
रासबेरी, अनन्नास,
नींबू, नारंगी व मोसंबी.

everest/78/PP/248-hn